चन्दामामा
जनवरी १९६२
50
NP
Vapa

जनवरी १९६२

रेमी
स्नो और
पाउडर
Remy

MADE IN INDIA FOR FIRST TIME MADE IN INDIA FOR FIRST TIME MADE IN INDIA FOR FIRST TIME MADE IN INDIA FOR FIRST TIME
पहले
नहीं चखी थी
इतनी स्वादिष्ट,
मजेदार
और पौष्टिक स्वीट्स
A.1.
ए. वन फ्रूटी
मनभाती और साथ में पौष्टिक भी।
आज चख कर देखिये और आप हर रोज़ इसे खूब खाना चाहेंगी।
आप के मनपसंद 6 स्वाद
पाइनेपल
ऑरेंज
चेरी
नट्स
लेमन
Fruitee
PINEAPPLE
सभी का वास्तविक मनोरंजन करनेवाली स्वीट्स
कलकत्ता
कन्फेक्शनरी वर्क्स
बम्बई—१६

नुर्सेकोस प्लास्टिक्ले

(रजिस्टर्ड)

बच्चों के रचनात्मक विकास के लिये

बच्चों के लिए एक खिलौने बनाने का अदभुत रंग बिरंगा मसाला जो बार २ काम में लाया जा सकता है। मनोरंजन के साथ २ शिक्षा का साधन—१२ आकर्षक रंगों में प्रत्येक खिलौने वाले व पुस्तक विक्रेता से प्राप्त करें—

नर्सरी स्कूल व होम इक्वीप्मेंट कम्पनी

पोस्ट बक्स 1419 देहली-6

Graphicarts

[illegible]

मैं काफी खुश रहने लगी हूं
पहिले से ज़्यादा चुस्त भी हो गई हूं
और काम भी खूब कर सकती हूं

सिंकारा अद्भुत और गुणकारी है, और उसने मुझे एक नया जीवन दिया है। जब से मैंने सिंकारा का सेवन करना शुरू किया, मैं ज़्यादा खुश रहने लगी हूं। अब तो मैं अपने सारे परिवार को सिंकारा का सेवन करवाती हूं।

सिंकारा शक्तिवर्धक और ताज़गी से युक्त शक्ति प्रदान करनेवाली जड़ीबूटियों के मिश्रण से बना हुआ टॉनिक है।

सिंकारा

हमदर्द

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

कई पाठक हमें लिखते हैं कि हम क्यों नहीं महान व्यक्तियों की जीवनियाँ छापते ?

हम यही कहना चाहेंगे कि "चन्दामामा" में हमने कई महान व्यक्तियों की जीवनियाँ दी हैं। कुछ वर्ष पूर्व बुद्ध की जीवनी हमने प्रकाशित की थी। औरों की भी सुविधानुसार हम भविष्य में देंगे।

हम मानते हैं महान व्यक्तियों की जीवनियाँ बच्चों के लिए आदर्श होती हैं...इसलिए हम आवश्यक समझते हैं कि वे उन्हें निरन्तर पढ़ते रहें, ताकि उनको प्रगति और सुधार के लिए प्रेरणा मिलती रहे।

इस समय हमारे पास सामग्री अधिक है और स्थल कम। और महापुरुषों की जीवनियाँ अन्यत्र भी उपलब्ध हैं।

वर्ष: १३ जनवरी १९६२ अंक: ५

भारत का इतिहास

हम सिन्धु सभ्यता के बारे में पहिले ही जान चुके हैं। उस सभ्यता के लोगों में और आर्यों में बहुत भेद थे। आर्यों की संस्कृति के आधार वेद हैं। वेदों में हरप्पा और मोहन्जदरो का जिक्र कहीं नहीं है। उनमें मूर्ति पूजा न थी। उनके आराध्य देव इन्द्र, वरुण, मित्र, अश्विनी, सूर्य और अग्नि आदि पुरुष देव ही हैं।

यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि वेद कब आविष्कृत हुए थे। परन्तु एशिया के पश्चिमी प्रान्तों के एशिया मायनर जैसे देशों में प्राप्त लिखित सामग्री से मालूम होता है कि उन देशों का ऐसे राजाओं ने परिपालन किया था जिनके नाम आर्य नामों से मिलते थे, इन्द्र, मित्र, वरुण आदि उनके इष्ट देवता थे। यह सब ई. पू. चौदहवीं शताब्दी के पहिले की बात है।

ऋग्वेद में इसके प्रमाण हैं कि आर्य भारत में कहीं और से आये थे। कहा जाता है इन्द्र बहुत दूर देशों से यदु, तुर्वशल जातियों को लाया था। प्राचीन समय में पर्शिया के देशवासियों के पशु नहीं तो परशु नाम हुआ करते थे। उनसे यदुओं का सम्बन्ध था। ऋग्वेद में परशु और पार्थव के युद्ध का वर्णन है। यह पार्थव सृंजयों का राजा है।

कालक्रम से आर्य जातियों में दो भाग हो गये। एक भाग में सृंजय, भरत थे और इसके भाग में यदु, तुर्वश, द्रुह्य, अनु और पूरु हुआ करते थे। ये दोनों स्थानिक दस्युओं के साथ रहे। दस्यु काले थे। उनकी नाक भी चपटी थी। यज्ञों में बलि दिया करते। ऐसी भाषा में बोलते जो आर्य समझ न पाते थे।

हो सकता है कि ये सिन्धु सभ्यता के लोग हों।

वेदों में आर्य जातियों में भरत का विशेष वर्णन है। ये जिन प्रान्तों में रहते थे, वहाँ की विशेष नदियाँ थीं दृषद्वती, सरस्वती और अपया। ये सब प्रान्त मध्य एशिया के पश्चिम में हैं। भरत अग्नि की पूजा किया करते थे। उनके शासक तृत्सु वंश के थे। तृत्सुओं का कुल गुरु वशिष्ट था। आर्य जातियों के परस्पर कलह के कारण भरत, अत्युन्नत स्थान पर पहुँचे।

आर्य और अनार्यों के युद्ध और भी उल्लेखनीय हैं। इन युद्धों में जीतकर, आर्यों ने अनार्य देशों को वश में किया। वे पूर्व की ओर फैल गये। शम्बर नामक अनार्य वीर को दिवोदास नामक व्यक्ति ने हराया। विश्वामित्र को गुरु मानकर सुदास ने यमुना तक के कई अनार्य जातियों को हराया। पूर्वी प्रान्तों को वश में करने के लिए भरत की तरह पूरों ने भी विशेष प्रयत्न किया।

ऋग्वेद के समय तक आर्यों ने काबुल नदी से सरयू नदी तक का प्रान्त स्वाधीन कर लिया था। इस प्रान्त का बड़ा भाग सप्त सिन्धु कहलाया जाता था। इन प्रान्तों पर केवल आर्यों ने ही आक्रमण न किया था। आर्यों के साथ स्थानिक जातियाँ भी हुआ करती थीं।

ऋग्वेद के समय, शासन का अधिकार राजा को था। वह अपने राष्ट्र और प्रजा की रक्षा किया करता था। उसका एक पुरोहित होता था, जो उसे मन्त्रणा तो देता था, साथ मन्त्र-तन्त्रों से उसका शुभ भी किया करता। यह नियम था कि शासक प्रजा का समर्थन प्राप्त करे।

उस समय के सामाजिक व्यवस्था की ईकाई परिवार था। पिता कुटुम्ब का बड़ा था। स्त्रियाँ पढ़ा करती थीं। उन्होंने कई ऋचायें भी लिखी हैं। उचित आयु के आने पर ही उनका विवाह होता था। कई प्रेम करके भी विवाह करते थे। कई धन के लिए भी विवाह करते थे। अधिक व्यक्तियों की एक ही पत्नी थी, पर अधिक पत्नियों का होना दोष न था। उन दिनों वे सूती, ऊनी कपड़े पहिनते थे और उन पर सोने का काम भी करते थे। कई मृग-चर्म पहिनते थे। त्यौहारों पर सोने के आभूषण और फूल मालायें पहिना करते। उसी तरह दावतों में माँसाहार भी होता था। साधारणतया, वे अन्न, दूध, मक्खन, फल वगैरह खाया करते थे। पहिले गौ का माँस खाया जाता था, पर धीमे धीमे इसकी प्रथा लुप्त हो गई। वे सोम रस नामक दो मादक द्रव पिया करते थे। पुरुष शिकार व व्यायाम किया करते थे। स्त्रियाँ नृत्य व संगीत सीखा करती थीं।

आर्यों के समाज में वर्ण-व्यवस्था धीमे धीमे आई। दस्यु शूद्र बना दिये गये। उसी तरह आश्रम भी बने। खेती हुआ करती थी। व्यापार भी शुरु हो गया था। धन के रूप में गौवों का विनिमय होता था, निष्कय नाम के सोने के सिक्के भी चलते थे। आने जाने के लिए घोड़ों के रथ और बैल गाड़ियों का उपयोग होता था। कुम्हार, लुहार, सुनार, वैद्य भी होते थे।

ऐसा लगता है कि आर्यों की कोई लिपि न थी। वेद गुरु सिखाता, शिष्य कंठस्थ करते और यही गुरु शिष्य परम्परा चलती गई। अशोक के शिलालेखों की जो लिपि है वह अनार्यों की लिपि है।

छठा अध्याय

यज्ञ भंग जब हुआ दक्ष का
भागे सुर-मुनि भीत,
ब्रह्माजी के निकट पहुँचकर
बोले बड़ी विनीत—

"वीरभद्र ने यज्ञ भंग कर
किया बहुत उत्पात,
भीषण काण्ड हुए जो उनकी
कहें भला क्या बात!

नोंच-नोंच कर दाढ़ी भृगु की
किया बुरा है हाल,
और दक्ष का शीश काटकर
दिया अग्नि में डाल।

रक्तधार से यज्ञकुण्ड की
बुझी अग्नि तत्काल,
नाच रहे अब यज्ञ-सभा में
शिव के गण विकराल।

चहल-पहल अब कहाँ दक्ष की
सब कुछ हुआ विनष्ट,
हृदय याद कर ही उसके तो
होता हमको कष्ट।"

ब्रह्माजी यह सुनकर बोले—
हुआ बहुत ही ठीक,
लीक छोड़कर दक्ष घमंडी
चलता रहा अलीक।

शिव देवों के देव, उन्हींका
किया बड़ा अपमान,
दण्ड उसीका मिला उसे है
चूर-चूर अभिमान।

शिव की शरण गहो अब जाकर
वे हैं दयानिधान,
विनती सुनकर देंगे सबको
शीघ्र क्षमा का दान।"

"भारतीभक्त"

पहुँचे सब कैलास अंत में
ब्रह्माजी के साथ,
'हर-हर शंभो' कह मुनियों ने
जोड़े अपने हाथ।

शिवजी थे आसन पर बैठे
नारद भी थे पास,
किसी विषय पर चर्चा उनमें
छिड़ी हुई थी खास।

गले मिले शिव से ब्रह्माजी
और कही यह बात—
"मायाभ्रमित जगत के प्राणी
इनकी क्या हो बात!

करें न इन पर कोप आप तो
दया-क्षमा के मूल,
यज्ञ भी ग्रहण करें अब
बातें पिछली भूल।"

इसपर शिवाजी बोले तत्क्षण—
"अच्छा, यह मंजूर!
चलता हूँ मैं यज्ञ-सभा में
होगी बाधा दूर।"

यज्ञ-सभा में जाकर शिव ने
किया गणों को शांत,
नहीं एक भी रहा वहाँ जन
भय से तब आक्रांत।
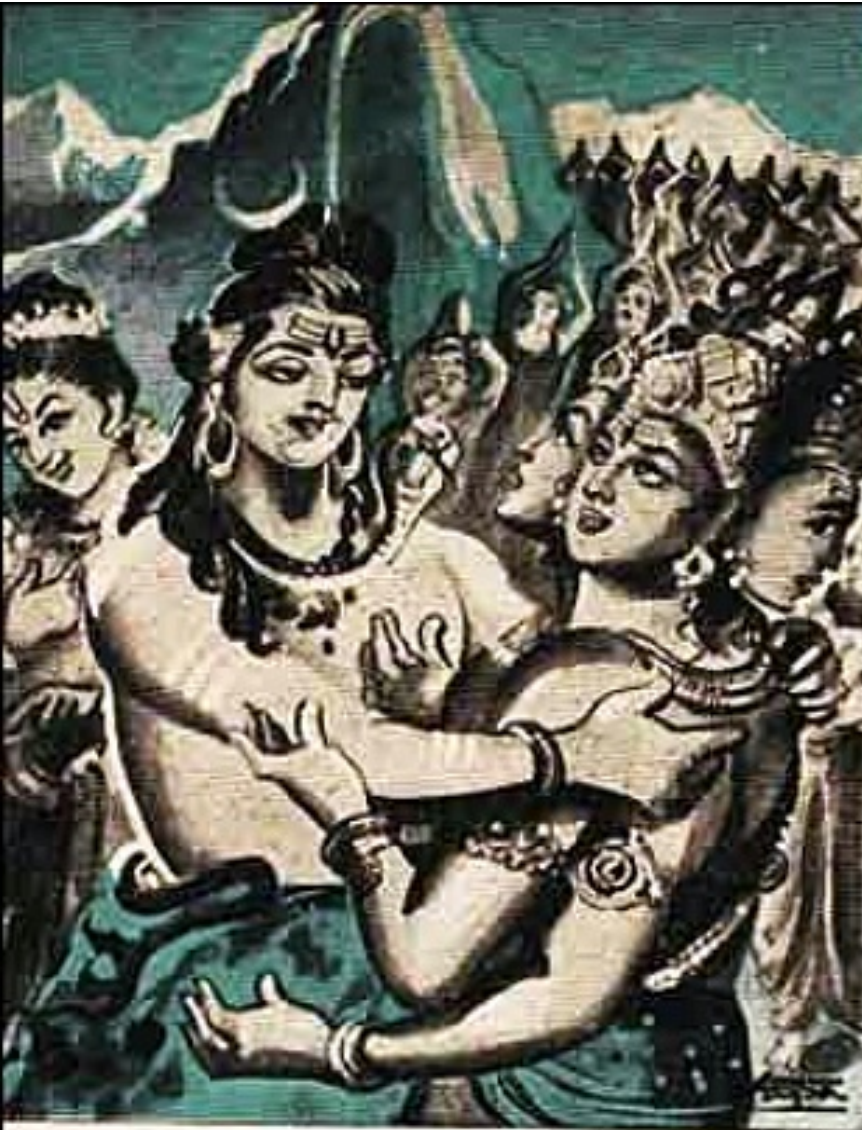
सुर-मुनियों ने कहा यही तब
ले-ले गहरी साँस—
"किस मुँह से हम जाएँ अब तो
शिवशंकर के पास!

शिवपत्नी का किया दक्ष ने
था भारी अपमान,
जिसे देखते रहे वहाँ हम
खोली नहीं जबान!"

ब्रह्माजी यह सुनकर बोले—
चलो अभी कैलास,
मैं भी साथ चलूँगा, तुम सब
होओ नहीं निराश।"

पड़ा दक्ष का धड़ था भूपर
सिर ही जब न मिला,
बकरे का सिर लगा उसीपर
शिव ने दिया जिला।

भृगु की ठुड्डी पर मेढ़े की
दाढ़ी खूब फबी,
जिसे देख देवों के मुख से
निकली हँसी दबी।

जितने भी थे मृतक वहाँ पर
सबमें जागे प्राण,
यज्ञ-सभा फिर बनी सुहानी
थी जो बनी मसान।

दक्ष गिरा चरणों में शिव के
बोला होकर दीन—
"प्रभो, पातकी मैं हूँ सचमुच
किये कर्म अति हीन।

अपनी पुत्री पर बरसायी
अपमानों की आग,
जिसकी ज्वाला में जलकर वह
गयी देह को त्याग।

मुक्त किया क्यों मुझे पाप से
थूकेगा संसार,
व्यर्थ जिलाया मुझे आपने
जीवन मेरा भार!"

ब्रह्माजी ने समझाया तब—
"दक्ष, मिटा तव दंभ;
शिव प्रसन्न हैं, यही सोच फिर
करो यज्ञ आरंभ!"

यज्ञ हुआ आरंभ दक्ष का
गूँजा मंत्रोच्चार,
प्रकट हुए तब यज्ञकुण्ड से
विष्णुदेव साकार।

शंख-चक्र औ' गदा-पद्म को
धारण कर भगवान
शोभित ऐसे हुए कि लखकर
भूले सब ही भान।

'ओम् नमो नारायण' कहकर
गाते वन्दन-गान,
करने लगे सभी जन उनका
सुन्दर महिमा-गान।

कर प्रणाम स्वीकार सभी का
बोले तब भगवान—
"पूरी हो इच्छाएँ सबकी
देता हूँ वरदान!

मैं ब्रह्मा हूँ, मैं ही शिव हूँ
मैं ही तीनो देव,
पालक भी मैं, नाशक भी मैं
मैं ही स्रष्टा देव।

हम तीनों में भेद नहीं है
सब में देखो एक,
शक्ति एक ही धारण करती
जग में रूप अनेक।

जो तीनों में भेद लखेगा
वह होगा अति मूढ़,
नहीं सत्य को सौ जन्मों में
पाएगा वह ढूँढ।"

इतना कहकर हुए विष्णुजी
पल में अंतर्धान,
शिवजी औ' ब्रह्मा के मुखपर
दौड़ी झट मुस्कान।

बनी सती ही पार्वती फिर
हुआ दूसरा जन्म,
किया उन्होंने पा शिव को फिर
सफल नया यह जन्म!

★ [समाप्त]

[६]

[भ्रामदण्डी मान्त्रिक के शिष्य जयमल्ल के साथ केशव हाथियों के झरने में स्नान करने गया। वहाँ से लौटते समय, जयमल्ल ने केशव से मान्त्रिक के कारण आनेवाली आपत्ति के बारे में बताया। ये जब गुफ़ा के पास पहुँच रहे थे, तो मान्त्रिक ने ज़ोर से पुकार कर उन्हें कुछ समिधायें लाने के लिए कहा। बाद में—]

भ्रामदन्डी का उसको देखकर मुस्कराना और यह कहना कि कालभैरव भूख के कारण तड़प रहा था—इस सबने केशव को भयभीत कर दिया। केशव ने सोचा कि कहीं उसने जयमल्ल और उसकी बातें अपनी मन्त्र शक्ति के कारण सुन तो नहीं ली थीं। चार पाँच घंटे में तय हो जायेगा कि वह मरता है या मान्त्रिक भ्रामदण्डी।

केशव यही सोचते सोचते जयमल्ल के साथ पेड़ के नीचे कुछ समिधायें इकट्ठा करता रहा। जब एक बड़ा-सा गट्ठर बन गया तो दोनों उसे सिर पर उठाकर मान्त्रिक के गुफ़ा की ओर गये। जैसे जैसे वे गुफ़ा के पास पहुँचने गये वैसे वैसे उनको मान्त्रिक का मन्त्रों का पढ़ना सुनाई दिया। जयमल्ल और केशव ने लकड़ियों का गट्ठर गुफ़ा के सामने

डाल दिया और चुपचाप गुफ़ा के अन्दर चले गये।

ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक, कालभैरव की मूर्ति के सामने पद्मासन लगाकर जोर से मन्त्र पढ़ता, बीच बीच में मूर्ति पर वह पत्थर फेंकता जा रहा था। यह भी क्या पूजा करना है—केशव ने ऐसी शक्ल बनाई जैसे पूछ रहा हो यह क्या कर रहा है? जयमल्ल की ओर इशारा किया। उसने होंठ पर हाथ रखकर बताया कि वह कुछ न बोले।

इधर पहाड़ पर गुफ़ा में मान्त्रिक, कालभैरव की कंकड़ों से पूजा करके उसे प्रसन्न करने में लगा हुआ था और उधर ब्रह्मपुर में प्रजा और राजा इस चिन्ता में थे कि कब आस पास के राजा उनपर आक्रमण करते हैं। राजा और मन्त्री का ख्याल था कि पहाड़ पर शत्रु सेना जमा हो रही थी। इसलिए उन्होंने कुछ सेना यह जानने के लिए वहाँ भेजी कि पहाड़ पर क्या हो रहा था, उनको यह भी कहा गया कि यदि वहाँ शत्रु हों तो उनको मार दिया जाये। परन्तु अभी वे पहाड़ पर चढ़ ही रहे थे कि सारा पहाड़ काँप उठा। बड़े बड़े पत्थर लुढ़कने लगे और बहुत-से सैनिक मारे गये। और जो मरने से बच गये थे, वे जो कुछ उन्होंने पहाड़ पर देखा था उसके बारे में तरह तरह की बातें कह रहे थे।

राजा के रहस्यकक्ष में उसके साथ मन्त्री, हाल में नियुक्त सेनापति और राजगुरु भी थे। सेनापति और मन्त्री का कहा सुनने के बाद राजा ने अपने गुरु की ओर मुड़कर कहा—"गुरु जी, आपने

सब सुन ही लिया है। सैनिकों की किन बातों पर विश्वास किया जाय? क्या विश्वास किया जाये कि उस पहाड़ पर सैकड़ों सैनिक हैं? या इस बात पर विश्वास किया जाय कि वहाँ एक मान्त्रिक है, जिसने शरीर पर खून पोत रखा है और जिसकी आँखों से अंगारे निकल रहे हैं? कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

राजगुरुने एक क्षण कुछ सोचा फिर सिर हिलाते हुए धीमे धीमे कहा—"हम क्यों न यह सोचें कि दोनों बातें ही ठीक हैं?"

"मान्त्रिक और शत्रुओं में कैसे पटी? आपका शायद यह कहना है कि वह मान्त्रिक भी शत्रुओं की मदद कर रहा है?" राजा ने पूछा।

"मैं यह निश्चित रूप से तो नहीं कह सकता, यही सत्य है। पर एक बात अवश्य सत्य है कि जो हमारे सैनिक उस पर्वत के पास गये थे, वे पगला गये हैं। यह बात छोड़िये कि इन लोगों ने वहाँ सैकड़ों शत्रु सैनिक देखे हैं, वे तो यहाँ तक कह रहे हैं कि मान्त्रिक ने ही पर्वत में भूचाल पैदा किया था। फिर वहाँ यह

विचित्र जन्तु भी है?" कहता कहता राजगुरु मुस्कराया।

"क्या वैसे जन्तु के होने की ही गुंजाइश नहीं है? पहिले तो मुझे विश्वास न हुआ। परन्तु उस मान्त्रिक के बारे में सुनने के बाद...." कहता कहता मन्त्री सहसा रुका।

"मन्त्री! मैंने भी थोड़ा बहुत मन्त्रशास्त्र पढ़ा है।" राज गुरु ने झुंझलाते हुए कहा।

"गुरु जी! इसीलिए तो आपको यहाँ बुलाया है। बिना आपकी सहायता के

हम कुछ नहीं कर सकते।" राजा ने राज गुरु को मनाते हुए कहा।

"हम उन लोगों की बातों से, जिन्होंने अनुमान मात्र किया है, किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सकते। आप अपने अंगरक्षक के नेतृत्व में कुछ सैनिकों को पहाड़ पर जाने दीजिये।" कहता हुआ राजगुरु उठा और कमरे से बाहर चला गया।

राजा की आज्ञा पर अंगरक्षक सैनिकों के साथ यह जानने के लिए निकल पड़ा कि पहाड़ पर कौन था और वहाँ की परिस्थिति क्या थी! वे पहाड़ के पास के जंगल में गये।

सामने वह पहाड़ था, जो भूचाल के कारण भयंकर मालूम हो रहा था। पत्थरों के पत्थरों पर गिरने पड़ने से डरानेवाली आकृतियाँ बन बना गईं थीं। यह देख उसके डर की हद न थी। साथ के सैनिकों की तो बुरी हालत थी। वे डर के मारे काँप रहे थे।

"तुममें से कोई क्या पहिले इस पहाड़ पर चढ़ा है? क्या अच्छा होता, यदि कोई हममें ऐसा होता, जो यहाँ के रास्ते वगैरह जानता हो!" राजा के अंगरक्षक ने चिन्तित होते हुए कहा।

उसके साथ के सैनिकों में एक पहिले पहाड़ पर चढ़ चुका था। परन्तु शत्रु सैनिकों की कथाएँ, विचित्र जन्तु, मान्त्रिक की बातें याद करके उसके रोंगटें खड़े हो रहे थे।

"हुजूर....पहाड़ पर चढ़कर देखने को है ही क्या! यदि वहाँ शत्रु हैं या मान्त्रिक ही हैं हम जीते जी उनके बारे में राजा से कहने के लिए जा न सकेंगे। यदि यह माना जाये कि वहाँ ये कोई नहीं हैं

तो वहाँ जाना ही बेकार है।" सैनिक ने कहा।

अंगरक्षक को उनकी ये बातें जंचीं। वापिस जाकर अगर यह कह दिया गया कि वहाँ कोई नहीं है, काफी है। पर साथ के सैनिकों का कैसे विश्वास किया जाय! राजा की कृपा पाने के लिए यदि उन्होंने कह दिया कि हम पहाड़ पर चढ़े ही न थे तो..."

"ओह, ये सब बेकार की बातें हैं। हमें पहाड़ पर चढ़कर देखना ही होगा कि वहाँ कौन है! शत्रुओं के हाथ मारे जायेंगे तो वीर स्वर्ग प्राप्त करेंगे। यदि जीते जी वापिस गये तो राजा से बहुत-से ईनाम पायेंगे। फिर भी यदि कोई रास्ता दिखाने वाला हो, तो बड़ा अच्छा हो..." सोचते सोचते सिर खुजलाते खुजलाते अंगरक्षक ने पहाड़ की ओर देखा।

अंगरक्षक और उसके सैनिक जिस पेड़ के नीचे खड़े थे, उस पेड़ पर केशव का बूढ़ा पिता बैठा था। जब से उसका लड़का विचित्र जन्तु पर सवार होकर पहाड़ पर चला गया था, तब से वह वहाँ की कई बातें देख रहा था। मान्त्रिक का गुफा से बाहर आना, अपने लड़के और उसके समवयस्क एक और लड़के का बातें करना, ब्रह्मपुर के सैनिकों का आक्रमण—पहाड़ पर भूचाल का आना—उसने सब कुछ देखा था।

बूढ़े को विश्वास हो गया था कि उसका लड़का किसी मान्त्रिक के चुंगल में फँस गया था। वह सोच रहा था कि कैसे वह अकेले जाकर उसकी रक्षा करे। अब इन सैनिकों के साथ पेड़ के नीचे आना और उनका यह कहना कि क्या अच्छा होता यदि कोई रास्ता

दिखानेवाला होता—यह सब सुन उसे कुछ ढाढ़स हुआ।

बूढ़ा बिल्ली की तरह टहनियों पर से उतर पास के एक और पेड़ के नीचे गया। वहाँ लेट गया। आँखें मूँदकर इस तरह बोलने लगा, जैसे नींद में बड़-बड़ा रहा हो। उसका बड़-बड़ाना सुन राजा के अंगरक्षक और सैनिकों के ऊपर के प्राण ऊपर रह गये और नीचे के नीचे, दोनों एक साथ कूदे। उन्होंने उस तरफ़ देखा, जिस तरफ़ से आवाज़ आ रही थी। उन्हें पेड़ के नीचे बूढ़ा दिखाई दिया।

"यही शायद मान्त्रिक होगा! उसकी बड़ी दाढ़ी देखी। सोता मालूम होता है, यदि अब उसका गला काट दिया गया, तो काम पूरा हो जायेगा।"

यह सुनते ही बूढ़े ने सोचा कि उस पर आफ़त आनेवाली थी। वह अंगड़ाई लेता उठा। बूढ़े के हाव-भाव देखकर अंगरक्षक ने सोचा कि वह मान्त्रिक न था।

वह म्यान में तलवार रखते हुए अट्टहास करके उसके पास आया। "कौन हो

तुम! यहाँ तुम्हें क्या काम है!" उसने दान्त पीसते हुए पूछा।

बूढ़े ने अभी जवाब न दिया था कि सैनिकों में से एक ने पूछा—"क्या तुम शत्रु सैनिक हो!"

"हुज़ूर, जो कुछ आप सोच रहे हैं, मैं वह कुछ भी नहीं हूँ। मैं इस जंगल में कन्द मूल पर निर्वाह करनेवाला बूढ़ा हूँ।" बूढ़े ने कहा।

यदि यही बात है, तो मैं विश्वास दिलाता हूँ कि हम तुम्हारा कुछ न बिगाड़ेंगे। मैं ब्रह्मापुर राजा का अंगरक्षक

हूँ। मैं, यहाँ यदि कोई शत्रु हो, तो उनको खतम करने के लिए आया हूँ। क्या तुम पहाड़ पर रास्ते जानते हो?" अंगरक्षक ने पूछा।

बूढ़े ने हथेली दिखाकर कहा—"मैं जिस तरह हाथ की लकीरें जानता हूँ, उसी तरह पहाड़ के रास्ते जानता हूँ।"

"अरे वाह, तुम अच्छे वक्त मिले। तो आगे चलकर रास्ता दिखाओ। तुम्हारी हालत तो अब तब की ही जान पड़ती है, नहीं तो राजा से कहकर तुम्हें बहुत से ईनाम दिलवाता।" अंगरक्षक ने कहा।

बूढ़ा अंगरक्षक की बातें सुनता न मालूम होता था। वह तो बस इसलिए उतावला हो रहा था कि कैसे उस अंगरक्षक की मदद करता है। वह पहाड़ की ओर चलने लगा। कुछ दूर जाने के बाद अंगरक्षक ने बूढ़े के पास तलवार देखी। उसने चकित होकर पूछा—"जंगल में कन्द मूल पर जीनेवाले के लिए तलवार की क्या ज़रूरत है?"

"मैं कभी ब्रह्मपुर राजा के यहाँ सैनिक था। वह राजा नहीं, इनके पिता। तबसे यह तलवार मेरे साथ ही है।" बूढ़े ने झुँझला कर कहा।

यह सुनते ही सैनिक कानाफूसी करने लगे। अंगरक्षक ने उसे घूरते हुए धीमे से कहा—"हमारी जान पर कोई खतरा नहीं है। क्योंकि मुझे उस पर विश्वास न था, इसलिए ही मैंने उसे रास्ता दिखाने के लिए कहा। यदि उसने कोई धोखा दिया तो पीछे से उसका गला काट दूँगा।"

बूढ़े ने ये बातें सुन ली थीं, पर उसने इस तरह दिखाया जैसे सुना ही न हो। वह पहाड़ पर चढ़ गया। (अभी है)

दुष्कर्म का फल

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ से शव उतारकर, कन्धे पर डाल, हमेशा ही तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, इस संसार में न्याय नहीं है। तुम सज्जन हो। पर किसी की दुष्टता के कारण तुम आधी रात के समय, इस तरह मेहनत कर रहे हो। यह दिखाने के लिए कि एक के पाप के लिए दूसरा कैसे सजा भुगतता है, तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

एक राजा था। उसे अपनी पत्नी पर बेहद प्रेम था। उस प्रेम के कारण वह उसकी हर इच्छा पूरी करता। क्योंकि राजा उसकी प्रति इच्छा पूरी कर देता था, इसलिए रानी का लाड़ लगाव और भी अधिक हो गया। होते-होते उसकी इच्छायें विकट होती गईं।

रानी, जिस पर राजा अपने प्राण देता था, गर्भवती हुई। इसके साथ उसकी इच्छायें और भी बढ़ीं। राजा तो यूँही उसकी सब इच्छायें पूरी करता था, अब तो उन्हें पूरा करने में वह और भी जोश दिखाने लगा। रानी के महीने पूरे हो गये। प्रसव पास ही था कि उसने एक भयंकर इच्छा व्यक्त की। उसने कहा कि वह मनुष्य के रक्त में स्नान करना चाहती थी। यह इच्छा सुन राजा चकित हो गया। यह देख रानी ने कहा—"यदि मेरी यह इच्छा पूरी न की गई, तो मेरे प्राण न रहेंगे। मेरे साथ गर्भ के बच्चे के भी प्राण जायेंगे।"

यह सुनते ही राजा को ऐसा लगा जैसे उसके ही प्राण चले गये हों, वह तो इस आशा में था कि उसके एक लड़का होगा और उसका वंश सुरक्षित रूप से चलता रहेगा। इसलिए उसको पत्नी की इच्छा पूरी ही करनी पड़ी।

उसकी आज्ञा पर कुछ शिकारी जंगल में गये। वे सौ भीलों को पकड़कर राजा के पास लाये। राजा ने उन पर तरह तरह के अपराध आरोपित किये, उनके शिरच्छेद की आज्ञा दी। अभागे भीलों के सिर काट दिये गये। उनके खून को एक संगमरमर के होज़ में डाल दिया गया। राजा ने अपनी पत्नी को उसमें आकर स्नान करने के लिए कहा।

खुशी-खुशी भागी-भागी आई रानी संगमरमर के होज़ के पास। वह ज़ोर से चिल्लाई और मूर्छित हो गिर पड़ी। उस हालत में उसके एक लड़का पैदा हुआ।

उस लड़के को माता-पिता बड़े लाड़ प्यार से पालते आ रहे थे। वह सात साल का था कि एक बूढ़ा भिखारी

राजमहल के द्वार पर आया। वह ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया—"राजा और उसके लड़के को बाहर बुलाओ।" जब सैनिकों ने आकर यह बात राजा से कही तो वह क्रुद्ध हो उठा।

परन्तु रानी ने उससे कहा—"शायद कोई देवता उस भिखारी के रूप में आया है। लड़के को लेकर बाहर जाइये।"

राजा अपने लड़के को लेकर दुमंजले से उतरकर द्वार पर आया। रानी खिड़की में से झुककर उनको देख रही थी।

भिखारी ने राजकुमार को देखते ही कहा—"यह क्या इस लड़के के शरीर पर खून ही खून है!" कहकर वह पीछे चला गया। उसी समय रानी खिड़की से नीचे गिर गई और मर गई।

रानी के मरने पर राजा को अपना जीवन सूना सूना-सा लगा। "सौ भीलों को यूँही मरवा देने का पाप मुझ पर ही तो है। इसके लिए मेरी पत्नी को क्यों दण्ड मिलना चाहिए! यदि मैं पहिले मर जाता, तो वह भी मेरे साथ प्राण छोड़ देती। इसलिए मैं भी उसके साथ मर जाऊँगा।" राजा ने निश्चय किया।

उसने अपने कर्मचारियों को बुलाकर कहा—"मैं अपने प्राण छोड़ने जा रहा हूँ। जब तक मेरा लड़का राजा नहीं हो जाता, तब तक मेरे छोटे भाई से राज्य करवाओ।" फिर उसने आत्म हत्या कर ली।

राजकुमार देखने को तो बिल्कुल पिता के समान था, पर उसका मन माँ पर था उसमें मानसिक स्थिरता न थी। उसकी इच्छायें भी अजीब अजीब-सी थीं। उसके आसपास के लोग उसको समझकर, उसको आदर की दृष्टि से देखते।

वह लड़का जहाँ तक सम्भव होता, किसी से मिलता जुलता न। एकान्त में ही वह रहने लगा। वह प्रायः शिकारियों के साथ जंगल में शिकार खेलने जाता। वहाँ वह अपने साथियों का साथ छोड़ देता और अकेला-अकेला जंगल-पहाड़ों में घूमता फिरता। वह किसी को खोजता सा लगता था। पर वह स्वयं न जान पाता कि वह क्या चाहता था।

राजकुमार के बड़े होने तक उसके चाचा ने राज्य किया। उसने राजकुमार का एक लड़की से विवाह भी करने का प्रयत्न किया। पर किसी ने भी अपनी लड़की उसे देनी न चाही। यह अफ्वाह फैल गई कि वह लड़का शाप के कारण पैदा हुआ था। क्योंकि यह अफ्वाह बहुत दूर फैल गई थी, इसलिए निम्न जाति की स्त्रियों ने भी उससे विवाह करने से इनकार कर दिया। इसलिए उसका राज्याभिषेक भी ब्रह्मचारी के रूप में ही हुआ। वह ब्रह्मचारी राजा कहलाया।

वह एक दिन शिकार के लिए निकला। वह अपने साथियों से अलग हो गया। जंगल में अकेला घूमता-घूमता, वह एक

ऋषि के आश्रम में गया। उस आश्रम के प्रांगण में विनायक का एक मन्दिर था। उसके चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पेड़ ओर उन पर बड़ी-बड़ी बेलें थीं। ब्रम्हचारी राजा उन बेलों की बीच में, उनकी छाया में आराम से सो गया।

कहीं उसे स्त्रियों का बातचीत करना सुनाई पड़ा। वह जो उठा, तो उसने देखा कि एक सुन्दर मुनि कन्या विनायक के समक्ष साष्टान्ग करके कह रही थी— "भगवान ऐसी कृपा करो कि ब्रम्हचारी राजा मेरा पति हो।"

वह बड़ा अचरज में पड़ा। बेलों के पीछे से उस मुनि-कन्या के सामने आया। "मैं ही ब्रम्हचारी राजा हूँ।" वह उस आश्रम के ऋषि की लड़की थी। नाम था कुवलयिनी। वह उसको साथ अपने पिता के पास ले गई। उसने उन दोनों को विवाहित होने की अनुमति दे दी। उनको आशीर्वाद दिया।

राजा कुवलयिनी को साथ ले गया और उसके साथ सुखपूर्वक रहने लगा। कुवलयिनी भी सुखी थी। परन्तु राजा का मन चंचल हो उठता, उसे इधर-उधर की इच्छायें सताने लगतीं।

एक दिन राजा और रानी जंगल में गये। वहाँ जब वे घूम रहे थे, तो उनको एक सन्यासी दिखाई दिया। जब वे दोनों उसको प्रणाम करने जा रहे थे, तो उसने पैर दूब घास पर रखा। जब पैर में दूब चुभी तो वह चिलाया—एक पैर पर उछलने लगा। मुख से तरह-तरह के शाप उगलने लगा। सन्यासी को इतना निस्संयमित देखकर कुवलयिनी ज़ोर से हँस दी।

तुरत सन्यासी ने अपना क्रोध उसे दिखाया—"जल्दी न करो, तुम्हारे भी रोने के दिन दूर नहीं हैं। किसी का पाप तुम पर लगनेवाला है। देखते रहो!"

इस घटना के कुछ दिन बाद एक विचित्र मनुष्य आया। उसका मुँह घोड़े के मुँह की तरह लम्बा-सा था। वह बाँसुरी बजाता गली में आ रहा था, जो कोई उसका वादन सुनता, वह पगला-सा जाता। सुध-बुध खो बैठता।

यह देख नगरवासी बड़े झुंझलाये। वे घोड़े के मुखवाले को पकड़कर दुर्गा को बलि देने के लिए ले जाने लगे। यह बात राजा को मालूम हुई। उसने विचित्र व्यक्ति को बुलवाया, बाँसुरी बजाने के लिए कहा। घोड़े के मुँहवाले ने बाँसुरी बजाई।

उसका वादन सुनते ही राजा का मन जो हमेशा अस्थिर-सा रहता था, यकायक स्थिर हो गया। उसके आँखों के सामने हँसनेवाला मान सरोवर और उसके किनारे श्वेत सुन्दरी दिखाई दी। इस दृश्य को देखते ही वह अस्पष्ट इच्छा, जो उसको इतने दिनों से तंग कर रही थी, सहसा स्पष्ट हो गई। उसे संसार में बस वह श्वेत सुन्दरी ही चाहिए थी। वह उस

श्वेत सुन्दरी के अतिरिक्त, संसार में सभी को—कुवलयिनी को भी भूल गया।

यह बात फैल गई कि राजा पागल हो गया था। यह जानकर कि वह मान सरोवर पहुँचना चाहता था, सैनिक दिन रात पहरा देने लगे, कहीं वह महल छोड़ कर न चला जाये।

फिर भी एक दिन रात को राजा सबको चकमा देकर महल से निकल पड़ा। पीछे से एक आवाज़ सुनाई दी—"ठहरिये, आप मान सरोवर जा रहे हैं। मैं आपको रास्ता दिखाऊँगी।"

राजा रुक गया। उसको पास आने दिया। वह कुवलयिनी ही थी। परन्तु उसने उसे पहिचाना नहीं। यह जान सन्तुष्ट हो कि उसको रास्ता दिखानेवाला कोई मिल गया था, वह उसको साथ लेकर चलने लगा। रोज गुज़रते जा रहे थे, वे अभी चलते जा रहे थे और उसका उतावलापन बढ़ता जाता था।

"तुम्हारे कारण देरी हो रही है—मुझे रास्ता दिखाओ। मैं पहिले चला जाऊँगा।" उसने उससे कहा।
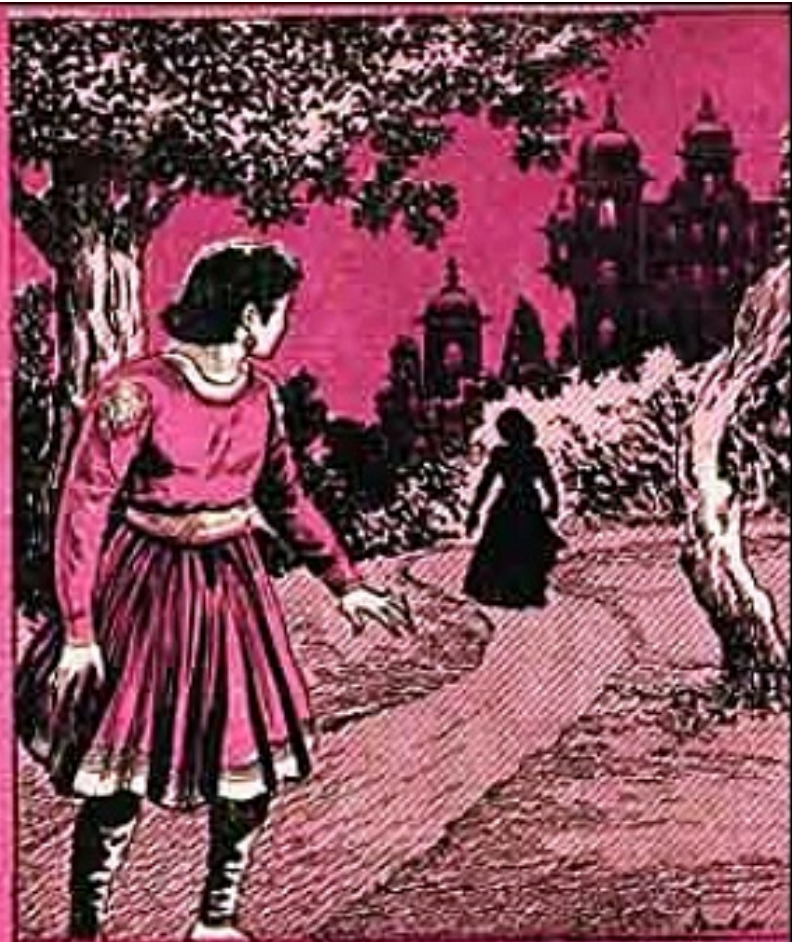
"जब तक हमारे रास्ते अलग नहीं हो जाते, तब तक नहीं बताऊँगी।" उसने कहा। वह स्थल भी आया। वह थक थका कर—बेजान-सी एक पेड़ के नीचे गिर गई और वहां से हिल न सकी।

"यहाँ से आपका रास्ता आपका है और मेरा रास्ता मेरा। मैं मान सरोवर का रास्ता नहीं जानती। जब तक प्राण है, तब तक आपके साथ रहना चाहती थी। इसलिए ही आपके साथ आकर मैंने आपको धोखा दिया। अब मेरे प्राण जा रहे हैं।"

राजा बड़ा झुँझलया। उसने गुस्से में उसका गला घोंट दिया। उसके प्राण निकल गये। उसके प्राण जाते ही राजा का पागलपन कुछ कम हुआ। वह मान गया कि वह उसकी पत्नी थी और उसने ही उसे स्वयं मार दिया था। वह रोने लगा। उसने पत्नी के बालों को गले में लपेट लिया। उसके शव को कन्धे पर डाल, वह पासवाले कीचड़ के पोखर में कूद पड़ा। इस तरह उसने अपने प्राण छोड़ दिये।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"बड़े राजा ने ही तो सौ भीलों को मार कर पाप किया था। उस पाप ने उसे और उसकी पत्नी को तो तंग किया ही उसके लड़के को भी तंग किया। पर कुवलयिनी को, जिसका उस घटना से कोई सम्बन्ध न था, क्यों दण्ड भुगतना पड़ा? यदि तुमने जान-बूझकर इस प्रश्न का उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

इसपर विक्रमार्क ने कहा—"पाप का फल एक मनुष्य को ही नहीं मिलता है। उसका फल उन सबको, जिनका उससे सम्बन्ध है, भुगतना पड़ता है। कुवलयिनी का अपने ससुर से यद्यपि कोई सम्बन्ध न था, पर जब उसने यह कहा था कि "मेरा पति ब्रह्मचारी राजा हो" तभी वह अपने ससुर के पाप में हिस्सा बाँटने के लिए उद्यत हो गई थी। जब एक घर जलता है, तो आसपास के घर भी जलते हैं। इस तरह पाप भी एक व्यक्ति या एक कार्य तक सीमित नहीं रहता है।"

राजा का मौन इस तरह भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर जाकर पेड़ पर बैठ गया।

सज्जन के कष्ट

बगदाद के खलीफ़ा हसन अल रशीद को कभी कभी रात में नींद न आया करती। उस समय वह वेश बदलकर, अपने नौकरों के साथ या तो शहर में घूमा करता, नहीं तो संगीत सुना करता, नहीं तो कविता पाठ सुनता, या हास्य कथायें सुनता।

उसको एक दिन नींद न आ रही थी। उसने अपने अंगरक्षक मस्रूर को भेजकर अपने मन्त्री जाफ़र को बुलवाया। वह उसको साथ लेकर पुस्तक भण्डार में गया। पुस्तकें देखते-देखते उसे एक पुरानी छोटी सी किताब मिली। खलीफ़ा धूल झाड़ कर उसे पढ़ने लगा। फिर वह ज़ोर से हँसा और तुरत उसकी आँखों में तरी आ गई।

जाफ़र यह सब देख रहा था—"हुज़ूर, पहिले इस पुस्तक को पढ़कर आप हँसे, फिर क्यों रोये? इसका क्या कारण है?" उसने पूछा।

यह प्रश्न सुन खलीफ़ा झुँझला उठा। "अरे, धूर्त। मुझे पूछनेवाले तुम कौन हो? यह पूछने के लिए, मैं तुम्हें सज़ा देता हूँ। मैं क्यों हँसा, क्यों रोया? इस पुस्तक का विषय क्या है? यदि तुम एक ऐसे व्यक्ति को बुलाकर न लाये, जो उनका उत्तर दे सके, तो तुम्हारा सिर कटवा दिया जायेगा।"

जाफ़र ने विनयपूर्वक कहा—"गुलाम ने गल्ती ही की है। हर कोई गल्ती कर सकता है। पर माफ़ करने की ताकत आप में ही है।"

"तुम्हें माफ़ नहीं किया जा सकता। यदि मेरे मुख से सज़ा का हुक्म निकल गया है, तो वह अमल होकर रहेगा।" खलीफ़ा ने कहा।

"हर किसी बात के लिए समय की आवश्यकता है। यही बात हमें दिखाने के लिए खुदा ने यह दुनिया सात दिन में बनाई जब कि वे इसे एक दिन में बना सकते थे। मुझे तीन दिन का समय दीजिये।" जाफ़र गिड़गिड़ाया।

"अच्छा, तो जाओ, तुम्हें तीन दिन का समय देता हूँ। तुम एक ऐसे आदमी को पकड़ लाओ, जो मेरी समस्या हल कर सके।" खलीफ़ा ने कहा।

जाफ़र घर गया। उसने अपने पिता और भाई से सारी बात कही। "सुल्तानों की खिदमत करना, साँपों से खेलना है। मेरा इस राज्य में रहना आपके लिए भी खतरनाक है। मैं यह देश छोड़कर जा रहा हूँ।" वह आत्मीयों से विदा लेकर एक तलवार और हज़ार दीनार लेकर, खच्चर पर सवार हो अकेला डमास्कस नगर की ओर निकल पड़ा।

डमास्कस जगत्प्रसिद्ध सुन्दर नगर था। जाफ़र खच्चर पर से उतर पड़ा। चलता, चलता नगर की शोभा देखता जा रहा था कि उसे एक महल दिखाई दिया। उसके चारों ओर बड़ा बाग था। उस बाग में रेशम का तम्बू गड़ा था। उसमें रत्न जड़े कम्बल बिछे थे। उन पर कीमती कालीन और गद्दे पड़े थे। तम्बू के बीच में पूर्ण चन्द्रमा की तरह एक सुन्दर युवक आराम से बैठा था। उसके सामने बहुत-से अतिथि बैठे बढ़िया पेय पी रहे थे। यह दृश्य देखता जाफ़र तन्मय हो खड़ा रहा। इतने में उसने देखा कि युवक के बगल में बैठी एक युवती एक सुन्दर गीत गाने लगी।

उसका गायन सुनने में मस्त हो जाफ़र कुछ और पास गया। तब तम्बू में बैठे

युवक ने उसे देखा। क्योंकि उस पर धूल जमा पड़ा था इसलिए उसने अनुमान किया कि वह कहीं दूर से आया था। गुलाम को भेजकर उसने जाफ़र को पास बुलाया। उसने जाफ़र से कहा—"आपके आने से हमारा घर पवित्र हो गया है।"

नौकरों ने जाफ़र को खाने की बढ़िया चीज़ लाकर दीं। जाफ़र के हाथ धोने के लिए उस युवक ने पानी दिया। उसने स्वयं खाने की चीज़ें परोसीं। यह आतिथ्य देख जाफ़र बड़ा खुश हुआ। पर वह अभी तक खलीफ़ा का गुस्सा नहीं भूल पाया था।

जाफ़र को आतिथ्य देनेवाले युवक का नाम अत्तफ़ था। वह बड़ा अमीर था। आतिथ्य आदि करने में वह बड़ा उदार था। वह उस परम्परा का पालन करता था, जिसके अनुसार अतिथि का सम्राट की तरह सत्कार किया जाना चाहिए। यदि आवश्यकता हो, तो अपना सर्वस्व भी दे देना चाहिए।

वह देख कि अतिथि को कोई बात सता रही थी, उसने उसकी भरसक मदद खुद करने की कोशिश की। "आप कौन हैं? किस काम पर इस नगर में आये हैं?" उसने पूछा। जाफ़र ने उत्तर दिया—"मैं बसरा का हूँ। मैं एक सिपाहसलार हूँ। क्योंकि जो कुछ मुझे खलीफ़ा को देना था, दे नहीं पाया था, इसलिए डरकर यहाँ भाग आया हूँ।"

"यानि, आपका दुर्भाग्य, हमारा सौभाग्य है। मेरा घर आप अपना ही समझिये। आप यहाँ जितने दिन चाहें, उतने दिन रहिये।" अत्तफ़ ने कहा।

जाफ़र अत्तफ़ के यहाँ चार महीने अतिथि के रूप में रहा और अत्तफ़ ने

बँधता जाता था। वह मस्जिद में गया। कुछ प्रवचन सुनने के बाद उसे कुछ शान्ति मिली। भिखारियों को दान देकर शहर देखता वह एक बड़े मकान के पास आया। उस मकान के पास एक बड़ी संगमरमर की बेन्च थी, उसके ऊपर कालीन बिछी हुई थी। जाफ़र उस पर बैठा आराम कर रहा था कि उसके सामने एक खिड़की खुली। एक अत्यन्त सुन्दर स्त्री दिखाई दी। उसने पौधों को पानी देकर, सिर उठाकर जाफ़र की ओर देखा।

उसका सौन्दर्य देखते ही जाफ़र का हृदय प्रेम से मानों जलने लगा। खिड़की के बन्द करते समय जाफ़र ने देखा कि वह उसको लगातार देख रही थी। उसने पूछा—"क्यों, क्या यह घर आपका है?"

"नहीं, देवी, पर यह गुलाम आपका है।" जाफ़र ने अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए कहा।

"यदि यह आपका घर नहीं है, तो आप अपने रास्ते क्यों नहीं चले जाते?" उसने पूछा।

"तुम पर दो शेयर लिखने के लिए थोड़ी देर रुका हूँ।" जाफ़र ने कहा।

उसे एक क्षण के लिए भी अकेला न छोड़ा। वह उसके साथ छाया की तरह लगा रहा। एक दिन जाफ़र ने अत्तफ़ से कहा कि वह अकेला सारा नगर देखना चाहता था। जब अत्तफ़ ने कहा कि वह घूमने फिरने के लिए एक घोड़ा देगा तो जाफ़र ने कहा कि वह अकेला पैदल घूमने जायेगा। अत्तफ़ ने उसको एक थैली में तीन सौ दीनारें दीं। "शायद कोई ज़रूरत आ पड़ेगी, आप इन्हें रखिये।" उसने कहा।

जाफ़र धीमे धीमे चलता जा रहा था। पर उसे खलीफ़ा द्वारा किया गया अपमान

"सुनाइये तो।" उसने पूछा।

जाफ़र ने दो शेयर सुनाये। उन्हें ध्यान से सुनकर कहा—"आपसे तो आपके शेयर ही अच्छे हैं।" कहकर उसने खिड़की बन्द कर दी।

जाफ़र को तो प्रेम की बीमारी हो गई थी। इस आशा से कि वह फिर दिखाई देगी, वह उसी बेन्च पर ही बैठा रहा। फिर पैर घसीटता घसीटता वह अशफ़ के घर गया।

जाफ़र को देखते ही अशफ़ ने पूछा—"आप क्यों ऐसे हैं?"

"मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मैं जीना भी नहीं चाहता।" जाफ़र ने कहा।

अशफ़ की फिक्र और भी बढ़ गई। उसने नौकर भेजकर नगर के बड़े वैद्य को बुलाया। वैद्य ने जाफ़र को देखकर कहा—"इन्हें प्रेम की बीमारी है।" अशफ़ यह सुनकर ज़ोर से हँसा—"वह लड़की कौन है?" जाफ़र ने पूछा।

जाफ़र ने सोचा कि जब तक वह सच सच नहीं बता देगा, तब तक अशफ़ नहीं

छोड़ेगा। इसलिए उसने उस स्त्री का और उस मकान का वर्णन किया। अत्तफ़ का कलेजा थम-सा गया, क्योंकि वह स्त्री अत्तफ़ की सम्बन्धी थी और वह उसकी पत्नी होने जा रही थी, वे दोनों आपस में प्रेम भी कर रहे थे। यदि यह बात जाफ़र को मालूम हो गई, तो जाफ़र उससे प्रेम करना छोड़ देगा, पर उसके आदर्श का भंग होता। अत्तफ़ का नियम था कि भले ही अतिथि की इच्छा, कितनी भी छोटी, मामूली हो, पूरी की जानी चाहिये। उसका अतिथि उसकी प्रेयसी से प्रेम कर रहा था। क्या उसकी इच्छा को यूँ ही घोंट दिया जाये?

अत्तफ़ अपने सम्बन्धियों के घर गया। उसने अपनी प्रेयसी और उसके पिता से बातचीत की। "मुझे में एक पवित्र इच्छा पैदा हो रही है। मैं पुण्य क्षेत्र देखने जा रहा हूँ। मक्का जाकर वहाँ कुछ साल रहूँगा। फिर मदीना जाकर वहाँ भी कुछ साल रहूँगा। इसी वजह से मैंने अपनी शादी की बात स्थगित कर दी है। अच्छा सम्बन्ध देखकर आप अपनी लड़की की शादी कर दीजिये। मुझ पर निर्भर न रहिये।"

यह सुन पिता और पुत्री तड़पे। "इस उम्र में तुम क्यों मक्का मदीना जाना चाह रहे हो? क्यों नहीं शादी करके आराम से जिन्दगी बसर करते? क्यों इधर उधर के प्रयत्न कर रहे हो?" उन्होंने पूछा।

मेरे पवित्र निर्णय को बदलने की कोशिश न कीजिये। मैं यही बात बताने आया था। आपकी सलाह के लिए नहीं आया था।" कहकर अत्तफ़ घर चला आया।

उसने जाफ़र से कहा—"मित्र, तुम चिन्तित न होओ। तुम्हारी इच्छा पूरी होने का उपाय मैंने ढूँढ़ निकाला है। यदि थोड़ा-सा धोखा दिया गया, तो वह लड़की तुम्हारी पत्नी हो सकती है। मेरा मामा बड़ा रईस है। वह किसी ऐसे वैसे को अपनी लड़की नहीं देगा। इसलिए तुम्हारे लिए आवश्यक नौकर चाकर तम्बू गुलाम आदि दूँगा। तुम नगर से बाहर जोर शोर से तम्बू लगाओ और वहाँ रहो। मैं नगर में अफ़वाह उड़ा दूँगा कि तुम खलीफ़ा के मन्त्री जाफ़र हो। फिर तुम मेरे मामा के पास खबर भिजवाओ और कहलाओ कि तुम उसकी लड़की से शादी करना चाहते हो। तुम्हारा प्रेयसी से विवाह हो जायेगा।"

अत्तफ़ न जानता था कि उसका अतिथि सचमुच खलीफ़ा का मन्त्री ही था। अकस्मात् उसके मुख से यों ही यह निकल पड़ा। उसने नगर से बाहर तम्बू, नौकर, चाकर, घोड़े, और सब चीजों का इन्तजाम कर दिया। जाफ़र को जरूरी कपड़े भी दिये। यह सब चुप चाप कर दिया गया।
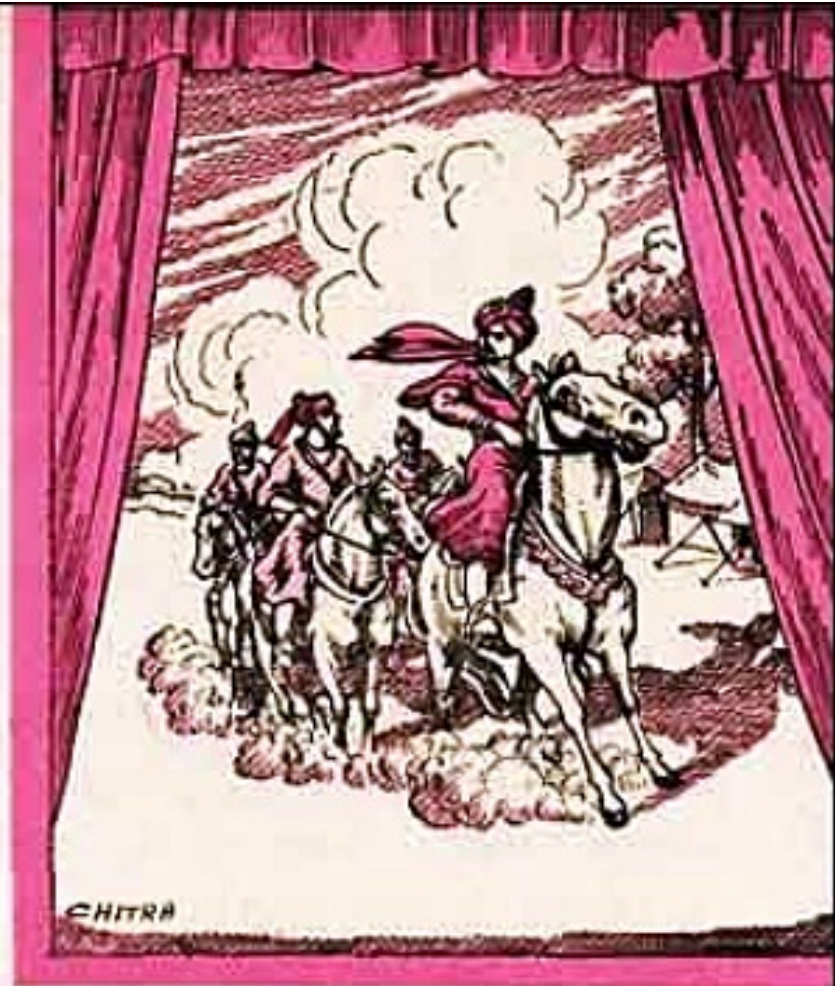
उसके हुक्म पर कुछ गुलामों ने डमास्कस के राजप्रतिनिधि के पास जाकर कहा कि खलीफ़ा के मन्त्री बगदाद से आये हुए थे और उन्होंने नगर के बाहर पड़ाव किया हुआ था।

राज-प्रतिनिधि तुरत नगर के प्रमुखों को लेकर जोर शोर से जाफ़र के पास गया। "हुज़ूर, अच्छा होता यदि आप अपने आने के बारे में इत्तिला दे देते। हम आपका खूब स्वागत करते।"

जाफ़र ने कहा—"यह सब कोई बड़ी बात नहीं है। मैं हवा बदलने के

लिए ही यहाँ आया हूँ। मैं अपने विवाह तक यहाँ रहूँगा और फिर चला जाऊँगा। सुना है ऊमर अमीर के एक लड़की है। क्या आप मेरा उसके साथ विवाह करवा सकेंगे।"

राज-प्रतिनिधि ने तुरत ऊमर के पास जाकर जाफ़र की इच्छा बताई। ऊमर को मानना पड़ा। अत्तफ़ की मेहरबानी कि उसने सब को सोना, चान्दी कपड़े वगैरह उपहार में दिये। विवाह पत्र लिखने के लिए काजी आया। गवाहों ने उस पर दस्तखत भी कर दिये। सब को भोजन व पेय दिये गये।

राज-प्रतिनिधि ने कहा कि वह एक घर का प्रबन्ध कर देगा, जिसमें जाफ़र अपनी पत्नी के साथ रह सके। परन्तु जाफ़र ने कहा—"मैं खलीफ़ा की आज्ञा पर यहाँ नहीं आया हूँ। इसलिए मुझे वापिस जाना होगा। विवाह सम्बन्धी उत्सव सब बगदाद में ही किये जायेंगे।"

नौकर-चाकर लेकर वह बगदाद की ओर निकला। उसकी पत्नी ने एक पाल्की में सफर किया। वे कुछ दूर ही गये थे कि अत्तफ़ घोड़े पर सवार हो, उनसे आ मिला। उसने जाफ़र को बुलाकर कहा—"भाई, जब से तुम निकले, तब से मेरा दिल धड़धड़ कर रहा था। तुम से दूर होने से तो यही अच्छा था कि मेरा तुम से परिचय ही न होता।"

जाफ़र ने अत्तफ़ को आतिथ्य और सहायता के लिए अपनी कृतज्ञता दिखाई। दोनों ने तम्बू में मिलकर भोजन किया। "तुम अपने कुशल क्षेम के बारे में अवश्य लिखते रहना।" अत्तफ़ कहकर, जाफ़र से विदा लेकर चला गया।

(अगले अंक में समाप्त)

पसीने की कमाई

वह सेठ जिसने गोल मटोल भीम को काम पर रखा था, शहर में पीपा-भर तेल खरीद कर घोड़े पर सवार होकर, गाँव के लिए निकल पड़ा। भीम सिर पर पीपा रखकर, घोड़े के पीछे पीछे चलने लगा।

देखते-देखते भीम की मर्ज़ी हुई कि क्या अच्छा हो कि उसके पास भी एक घोड़ा हो। उसने सेठ से पूछा—"इस घोड़े की कीमत कितनी है?"

"पाँच सौ रुपये। क्या खरीदोगे?" सेठ ने पूछा।

गोल मटोल भीम चलता-चलता सोचने लगा। घर जाते ही सेठ चवन्नी देगा। उससे एक मुरगी का अंडा और मुरगे का अंडा खरीदूँगा। उसमें से एक मुरगा और मुरगी निकलेंगे। वे फिर बहुत-से अंडे देंगे। उनमें से कितनी ही मुरगियाँ निकलेंगी। वे फिर कितने ही अंडे देंगी? उन सबके बड़े होने पर, बेचने पर सौ रुपये मिलेंगे। उन रुपयों से कई भेड़ खरीदूँगा। कुछ समय में होते-होते भेड़ों का बड़ा झुन्ड बन जायेगा। उस झुन्ड को बेचने पर आसानी से पाँच रुपये मिल जायेंगे। फिर घोड़ा खरीद कर उस पर सवार हो, हवा से बातें करूँगा।

भीम ने यह सोचते-सोचते पीपा हाथ से छोड़ दिया और हाथ इस तरह आगे पीछे करने लगा जैसे कोई लगाम खींच रहा हो और भागने लगा। तुरत पीपा नीचे गिरा और तेल मिट्टी में मिल गया।

पीपे को गिरा देखा, सेठ पीछे की ओर मुड़ा। घोड़े से उतरा। उसने गुस्से में पूछा—"यह क्या हुआ?"

"गल्ती मेरी नहीं है। मेरे घोड़े ने आपके घोड़े से आगे भागने की सोची।" गोल मटोल भीम ने कहा। उसकी बात सेठ न समझ सका। गोल मटोल भीम ने अपने सारे सपने उसे सुनाये। फिर उसने अपनी मज़दूरी की चवन्नी माँगी।

"मेरा इतना नुक्सान किया, फिर चवन्नी भी माँग रहे हो। जब तक यह नुक्सान पूरा नहीं हो जाता, तब तक तुम से काम करवाऊँगा और तब ही तुम्हें चवन्नी दूँगा।" खाली पीपा भीम के सिर पर रख, वह घर ले गया।

सेठ के घर एक बड़ा सफ़ेद कुत्ता था। उसके एक फोड़ा था। रोज सेठ उसकी स्वयं दवा करता। अब चूँकि एक नौकर मिल गया था, इसलिए उसने भीम से कहा—"कुत्ते के फोड़े पर दवा लगावो। देखो, उस पर मक्खियाँ न आयें।" गोल मटोल भीम ने फोड़े पर दवा लगादी और वहीं बैठ गया। मक्खियाँ मँडराती भिनभिनाती आईं।

उसने हाथ हिलाकर कहा—"जाओ, जाओ, सेठ ने कहा है कि तुम इस पर न भिनभिनाओ। सुना नहीं तुमने!"

मक्खियाँ जाने को गईं और फिर आ गईं। "और तुम से ही तो कह रहा हूँ, अक्ल नहीं है!" गोल मटोल भीम उन पर गरजता। परन्तु मक्खियों ने उसकी न सुनी।

"तुम बिना डंडे के नहीं सुनोगे!" कहता, गोल मटोल भीम कुछ दूर गया और एक बड़ा मूसल ले आया। कुत्ते पर भिनभिनाती मक्खियों को उसने मारना चाहा। यह देख कुत्ता घबरा गया और बाहर भागा। भीम उसके पीछे भागा।

दोनों गाँव से बाहर आ गये। सेठ के भागते कुत्ते को देख, गाँव के और

कुत्ते भी पीछा करने लगे। गोल मटोल भीम कुत्तों के उस झुन्ड के पीछे भागा।

इस गड़बड़ी में सेठ का कुत्ता कहीं गायब हो गया। गोल मटोल भीम ने एक और सफ़ेद कुत्ते को पकड़कर कहा—"सोचा था कि बचकर निकल जाओगे। चलो घर चलो।" कुत्ते ने उसे काटने की कोशिश की। उसने उसका मुख ज़ोर से दबा दिया। उसे उठा कर सेठ के घर आया। पर वह रास्ते में ही मर चुका था।

सेठ ने कुत्ते को देखकर पूछा—"यह कुत्ता किसका है? इसे यहाँ क्यों लाये हो?" उस पर वह उबला।

"यह हमारा ही कुत्ता है, सफेद कुत्ता, दिखाई नहीं दे रहा आपको?" गोलमटोल भीम ने कहा।

"पगले, यदि हमारा कुत्ता होता, तो उसका फोड़ा कहाँ है?" सेठ ने पूछा।

"दवा जो लगाई थी! फोड़ा ठीक हो गया।" गोल मटोल भीम ने कहा।

सेठ को उसकी बातें सुनकर गुस्सा आ गया—"यदि हमारा है, तो मेरे कुत्ते को घर क्यों लाये?"

"जब मैंने इसे पकड़ा था, तब जिन्दा ही था। यह मुझे काटने आया और मैंने इसका मुख ज़ोर से बन्द कर दिया।" भीम ने कहा।

"जाये तुम्हारी अक्ल भाड़ में। किसी गाँववाले का कुत्ता तुमने यूँ ही मार दिया। यदि उनको यह बात पता लग गई तो मेरी इज़्ज़त मिट्टी में मिल जायेगी और तुम्हारे प्राण जायेंगे। उसे एक चटाई में लपेटकर बगल में रख लो। मैं फावड़ा लेकर गाँव के बाहर जाता हूँ। वहाँ एक गड़ा खोदकर उसमें कुत्ते को गाड़ देंगे,

देखो यह बात किसी को न मालूम हो।" सेठ ने कहा।

फावड़ा लेकर, सेठ के चले जाने के बाद, भीम सफेद कुत्ते को एक चटाई में लपेटकर, उसके पीछे चल पड़ा।

जब वह खोजता खोजता सेठ के पास गया, तो उसने पहिले ही गढ़ा खोद रखा था। "इतनी देर क्यों की! कुत्ते को जल्दी बाहर निकालो।" सेठ ने गोल मटोल भीम से कहा। पर जब चटाई खोलकर देखी, तो उसमें कुछ न था। कुत्ता कहीं रास्ते में गिर गया था।

"फिर जाओ, देखो उसे कहाँ गिराया था, फिर उसे उठाकर लाओ।" सेठ ने भीम को फिर पीछे भगाया।

उसे यह याद न था कि किस रास्ते वह आया था, वह एक और रास्ते से सेठ के घर गया। रास्ते में उसे कहीं मरा कुत्ता न दिखाई दिया। पर जब वह घर पहुँचा, तो उसने देखा कि सेठ का सफेद कुत्ता कोने में पड़ा पड़ा सिसक रहा था।

"अरे....चोर कहीं का....मिल गया!" कहकर गोल मटोल भीम, उस कुत्ते को लेकर सेठ के पास गया। "मिलेगा
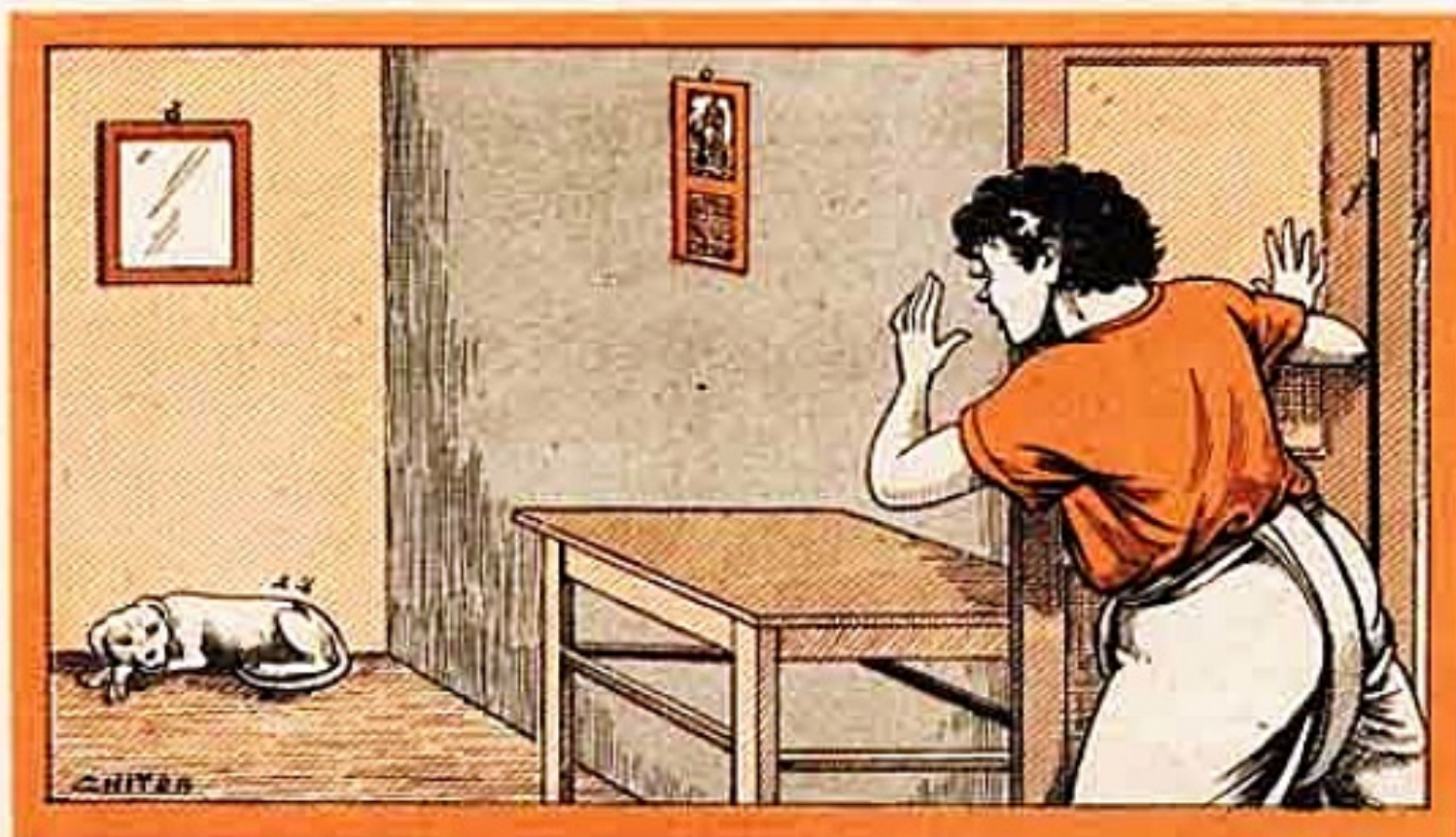
नहीं, तो कहाँ जायेगा? यह लीजिये, इसे गाड़ दीजिये।"

"अरे गधे कहीं के, यह हमारा ही कुत्ता है। जिन्दा है। इसे क्यों गाड़ा जाये? वह मरा कुत्ता कहाँ है?" सेठ ने पूछा।

"आप मना कर रहे हैं, पर जो कुत्ता मर गया था, वह यही है। उस सन्यासी की तरह यह भी जी उठा है।" गोल मटोल भीम ने कहा।

"जा, मूरख कहीं का, उस मरे कुत्ते को पकड़कर लाओ।" मालिक ने उसे फटकारा।

गोल मटोल भीम क्या करता? वह फिर पीछे चला। इस बार वह उसी रास्ते गया, जिस रास्ते आया था। जिस जगह कुत्ता गिरा पड़ा था वहाँ लोगों का झुन्ड जमा था। उन लोगों में उसका मालिक भी था। सब यह अचरज कर रहे थे कि कुत्ता कैसे मर गया था।

इतने में गोल मटोल भीम वहाँ आया, मरे कुत्ते को देखकर वह बोला—"अरे तुम यहाँ हो, आओ, तुम्हें गाड़ दें।" फिर उसने कुत्ते को उठा लिया।
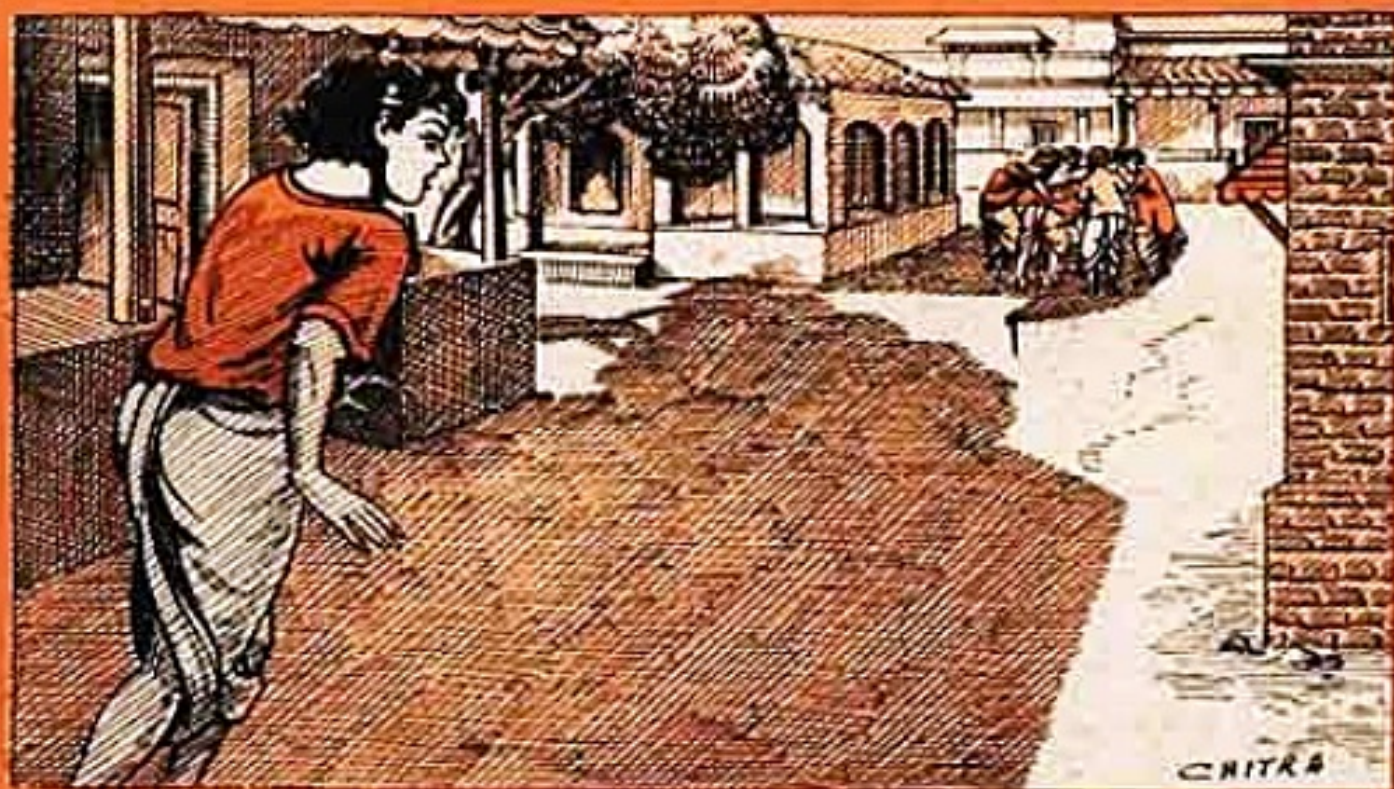
सब ने उसे खड़ा करके पूछा—"कौन हो तुम? उस कुत्ते से तुम्हारा क्या काम? क्या तुमने ही इसे मारा है?

"तुम ठहरो। गढ़े के पास मेरा मालिक मेरी इन्तज़ार कर रहा है। इससे पहिले की इसके बारे में किसी को पता लगे, इसे गाड़ देना है।" गोल मटोल भीम ने कहा।

चुटकी भर में सच मालूम हो गया। सब मिलकर, भीम के साथ सेठ के पास गये। "अरे, वाह आपको भी क्या सूझी है?"

सेठ का अपमान हुआ। उसने सिर पीटते हुए मरे कुत्ते के मालिक से कहा—"इसे मैं चलते चलते राह से उठा लाया था। अच्छी मुसीबत मैंने पाली। कुत्ते का हरजाना मैं दूँगा। मगर अब मुझे और तंग न करो।" उसने गोल मटोल भीम से कहा—"जो कुछ किया है, वह काफ़ी है। अब जाओ।"

"वाह वाह, मालिक मेरी चवन्नी कब दोगे?" गोल मटोल भीम ने कहा।

"जो किया है, वह काफ़ी नहीं है। तिस पर चवन्नी चाहते हो। तुम्हें शर्म नहीं आती।" सेठ ने गुस्से में कहा।

"आपने कहा था कि मास पूरा होने तक अगर मैंने काम किया तो चवन्नी दे देंगे। तो वह चवन्नी कहाँ है अब?" गोल मटोल भीम ने पूछा।

अगर वह खड़ा खड़ा उससे बात करता रहा, तो सेठ ने सोचा कि उसकी बची खुची इज़्ज़त भी जाती रहेगी। इसलिए उसने गोल मटोल भीम को चवन्नी दे दी।

गोल मटोल भीम उछलता कूदता, नानी को चवन्नी दिखाने घर की ओर निकला। (अगले मास एक और घटना)

तेली का तोता ★ [रामतीर्थ कथा]

एक तेली के पास एक सुन्दर तोता था। उसने उसे एक बड़े पिंजड़े में रख, तेल की दुकान पर शान से लटका रखा था। सब कोई उस तोते को देखता।

एक दिन तेली और उसका नौकर बाहर गये हुए थे कि दुकान में एक मोटी बिल्ली आयी।

उसे देखते ही तोता डरा, वह पिंजड़े में जोर जोर से पंख फड़फड़ाने लगा।

उसने इतना शोर किया कि पिंजड़ा नीचे तेल के एक मर्तबान पर गिरा। वह टूट गया। चकनाचूर हो गया।

पचास रुपये का तेल देखते देखते फाल्तू चला गया।

तेली वापिस आया, तोते की करतूत देख वह गरमा उठा।

तोते को पिंजड़े से बाहर निकाल, उसके सिर के बाल काटकर उसने उसे गँजा कर दिया। पर तब भी उसका गुस्सा ठंडा न हुआ।

और तोते ने गुस्से में उससे बातें करना ही छोड़ दिया। वह मालिक की तरफ़ आँख उठाकर देखता भी न। मालिक भी पछताया।

दो सप्ताह बीत गये। एक गँजा दुकान पर तेल खरीदने आया। वह तोता जो तब तक चुप था, उसे देख यकायक हँसने लगा।

"क्यों इतने खुश हो रहे हो?" मालिक ने पूछा।

"इस आदमी का मालिक भी तेली होगा। नहीं तो क्या उसके सिर पर एक बाल भी नहीं होता!" तोते ने कहा।

बाघ - गधा

रायपुर नामक ग्राम में एक धोबी रहा करता था। उसके पास एक गधा था। उस ग्राम से कुछ दूरी पर एक जंगल था। उस जंगल में एक बड़ा बाघ था। उस गाँव के गधे में और जंगल के बाघ में जैसे भी हो, दोस्ती हो गई।

इतने में उन दोनों में इस बात पर मतभेद हो गया कि उन दोनों में कौन अधिक बलवान था।

दोनों में कुछ देर तक चल-चल होती रही। आखिर बाघ ने कहा—"चल, हम दोनों बल आजमालें, लड़कर देखें, जो लड़ाई में जीतेगा वह अधिक बलवान होगा।" यह बात गधा भी मान गया।

बाघ रायपुर गया। वहाँ उसने एक सुनार से अपने नाखून खूब तेज़ करवा लिये। गधे ने भी अपनी पीठ पर ढेर से कपड़े लाद लिये और उन पर कीचड़ भी डाल लिया।

गधे और बाघ का युद्ध प्रारम्भ हुआ। बाघ नाखूनों से गधे को खरोंचने लगा। पर बहुत खरोंचा लेकिन उसके हाथ में कीचड़ और कपड़े ही आ रहे थे और कुछ न आ रहा था। लेकिन गधा, बाघ को दुलत्ती मार रहा था। बाघ की हड्डियाँ ही टूटती-सी लगती थीं। आखिर बाघ उसकी दुलत्तियाँ न सह सका। उसने अपनी हार मान ली।

यह सब उस जँगल में, गौवों को चरानेवाले लड़का देख रहा था। उसका नाम राम था। बाघ जान गया कि राम ने यह सब देख लिया था। उसने राम के पास आकर कहा—"तुम किसी से न कहना कि मैं हार गया हूँ।

नागार्जुन

अगर तुमने किसी से कहा, तो तुम्हें मार दूँगा।"

राम इसी डर में घर गया और एक नमक के बड़े हँडे में छुप गया। जब रात को भोजन के समय, हँडे में से राम की माँ नमक लेने गई, उसमें राम बैठा था।

राम की माँ ने पूछा कि क्या बात थी। उसने डरते-डरते सब कुछ बता दिया। तब उसके माता-पिता ने उसको ढाढ़स दिया। उस दिन रात को उन्होंने चारों ओर खाट लगा ली और बीच में उसे सुला दिया।

यह देखने के लिए कि वह उसकी हार के बारे में किसी को बताता है कि नहीं, बाघ भी आया और राम के घर के पिछवाड़े में, करेले के पौधे के पीछे चुपचाप छुप गया। जब बाघ ने राम की बात सुनी, तो उसे गुस्सा आ गया। घर में सबके सो जाने के बाद, राम की खाट को पीठ पर रखकर वह जँगल की ओर जल्दी से चल पड़ा।

इस तरह कुछ दूर जाने के बाद राम की नींद खुली। यह देख कि बाघ उसे ले जा रहा था, उसने धीमे-धीमे बाघ के बाल खाट से बाँध दिये। थोड़ी देर बाद बाघ एक बड़े इमली के पेड़ के नीचे जा रहा था। राम एक टहनी पकड़कर पेड़ पर चढ़ गया।

बाघ के कुछ दूर जाने पर एक कुँआ आया। राम को खाट के साथ कुँये में डालने के लिए, उसने उसे कुँये में डाल दिया। वह न जानता था कि उसके बाल खाट से बँधे हुए थे। इसलिए खाट के साथ वह भी कुँये में जा गिरा। उसमें वह मर गया। राम पेड़ से उतरकर घर जाकर आराम से रहने लगा।

सुवर्ण लोभी

हम पहिले ही एक कहानी पढ़ चुके हैं, जिसमें गोर्डियस नाम का किसान राजा हो गया था। इस गोर्डियस के मैड़ास नाम का लड़का हुआ। जब वह छोटा ही था कि चींटियों का एक झुन्ड सोने के रंग का गेहूँ का दाना, उस जगह आया जहाँ वह सो रहा था। एक एक चींटी उसके गाल पर चढ़ती और गेहूँ का दाना उसके होठों के बीच में रखती।

यह उसकी माँ ने देखा। उसने अपने दास और दासियों को बुलाकर कहा— "देखी तुमने यह अचरज की बात? जब युवराज बड़ा होगा, तो संसार में सब से अधिक धनी होगा।" इतने में लड़का उठा। गेहूँ के दाने थूककर वह रोता बैठ गया।

मैड़ास बड़ा हुआ और फ्रीजिया देश का राजा हुआ। उसका शासन तो अच्छा था, पर बुद्धिमत्तापूर्ण न था क्योंकि वह स्वयं मूर्ख था। उसे फूल के बगीचों का बड़ा शौक था। संगीत का भी बुरा चस्का था। वह सोने का भी बड़ा लालची था।

"मेरा लड़का बेहद सोना जमा करेगा।" उसकी माँ हमेशा कहा करती, इसलिए उसे सोना जमा करने का व्यसन-सा हो गया। परन्तु इतना सोना कैसे मिलता? इसके लिए आस पास के देशों को लूटना होता। परन्तु मैड़ास में युद्ध करने के लिए बल न था। वह व्यापार भी नहीं कर सकता था। इसलिए वह मन्त्रशक्ति से सोना जमा करने के सपने देखता आया था। उसके राज्य में मान्त्रिक, सिद्ध पुरुष भी न थे। इसलिए वह जँगलों में घूमा करता, सिद्ध पुरुषों की खोज करता। जँगल में जँगली जातिवालों से स्नेह करता।

नरेन्द्र

मैड़ास से स्नेह करनेवालों में साकर नामक निम्न जाति के लोग भी थे। इनके शरीर में मनुष्य के लक्षण थे और जन्तुओं के भी। मैड़ास ने एक साकर से मैत्री की। उसने कहा कि वह पहिला प्राणी था, जो बाँसुरी बजा सकता था। उसने बताया कि संगीत का देवता भी उसके बराबर नहीं बजा सकता था।

यह बात सुन संगीत देवता भी अपने किन्नरों के साथ उतर कर आया। मैड़ास को उसने निर्णायक बनाकर, साकर से बाँसुरी बजाने में मुकाबला किया। सब सुनने के बाद मैड़ास ने फैसला दिया कि उसके मित्र साकर का वादन ही अच्छा था। संगीत देवता क्रुद्ध हो उठा। "तुम्हारी बुद्धि के अनुकूल मैं तुम्हें शाप देता हूँ।" उसने मैड़ास से कहा। तुरत मैड़ास के कान गधे के कान जितने हो गये। कोई उन्हें देखकर मजाक न करे मैड़ास ने अपने सिर पर लाल पग्गड़ पहन लिया।

पर यह वह नाई से नहीं छुपा सकता था। इसलिए उसने नाई को बहुत-सा धन देकर, उससे यह शपथ करवाली कि वह उसका भेद किसी को न जानने देगा। नाई ने बहुत दिनों तक राजा का रहस्य किसी को न बताया।—पर उसे लगा कि यदि उसने किसी से इसके बारे में न कहा तो उसकी अक्ल जाती रहेगी। उसने आखिर हवा से ही चिल्लाकर कहने की सोची। एक दिन वह नदी के किनारे गया। वहाँ एक गढ़ा खोदकर उस में सिर रखकर चिलाया "मैड़ास राजा के कान गधे के कान हैं।" इस तरह कुछ देर चिल्लाने के बाद उसको जरा तसल्ली हुई। इसके बाद उसने गढ़ा भरकर सोचा—"अब खैर कोई बात नहीं।"

उसे विश्वास हो गया कि वहाँ के लोग उसके गधे के कानों के बारे में नहीं जानते थे। वह उन्हें अब भी लाल पगड़ से छुपाये हुआ था। वहाँ एक निर्जन घाटी में उसने अपने लिए एक महल बनवाया। उसके चारों ओर उसने गुलाब का बढ़िया बगीचा लगवाया।

उस घाटी के चारों ओर के पहाड़ों पर साकर रहा करते थे। वे गुलाब के बगीचे में आते और मन्त्रशक्ति के बारे में बातचीत किया करते। मैड़ास छुपकर उनकी बातचीत सुना करता। परन्तु साकर मैड़ास को दूरी पर देखते ही भाग जाते। इसलिए वह उनका स्नेह न पा सका। मैड़ास ने जैसे भी हो उनको पकड़ने की ठानी। उसने एक तारीका भी सोच निकाला।

किन्तु कुछ समय बाद, सरकंड़ा-सा उग आया। हवा आती, तो सरकंड़ा गुनगुनाने लगता—"मैड़ास राजा के कान, गधे के कान हैं।" इस तरह मैड़ास राजा का रहस्य सबको मालूम हो गया।

अब मैड़ास को राजा बने रहने की भी इच्छा न रही। उसने घोषणा निकलवा दी कि वह कोई और देश चला जायेगा। उसका लड़का छोटा था। बड़े होने पर उसको राजा बनाने की व्यवस्था करके वह निकल पड़ा। मैड़ास ग्रीस देश के उत्तर में गया और वहाँ उसने बस जाने की सोची।

गुलाब के बगीचे में एक जलयन्त्र था, उसके नीचे संगमरमर का एक होज़ था। उस होज़ में मैड़ास ने साकरों को पानी पीते देखा था। उसने एक दिन जलयन्त्र बन्द कर दिया, होज़ में से पानी निकलवा दिया। जलयन्त्र में से उसने पानी के बदले ऐसी व्यवस्था की कि मदिरा निकले।

उस दिन शाम को साकरों का मुखिया बूढ़ा उस जलयन्त्र के पास आया। बेहिसाब मद्य पिया। नशे में वह पासवाले घास के कालीन पर गिर गया और वहीं चान्दनी में खुर्राटे मारकर सो गया। उस समय मैड़ास ने उसको बन्धवा दिया और महल में उसे ला रखा।

अगले दिन साकर को होश आया। उसे जब मालूम हुआ कि वह कैदी हो गया था, तो उसने मैड़ास से कहा—"यदि तुमने मुझे छोड़ दिया, तो तुम्हें एक अजीब कहानी सुनाऊँगा।" वह अजीब-अजीब कहानियाँ सुनाने लगा। उस बूढ़े ने तरह-तरह के देशों के बारे में, दो फीट के आदमियों के बारे में, ऐसी ज़मीन के बारे में, जहाँ बिना हल चलाये ही पैदावार होती थी, ऐसे मनुष्यों के बारे में जो दुःख ही न जानते थे—उसने कई कहानियाँ सुनाईं। मैड़ास न माना।

आखिर बूढ़े साकर ने उस देश के बारे में कहानी सुनाई, जहाँ सोना ही सोना था। वहाँ जो कुछ किया जाता, सोने से ही किया जाता। वहाँ सोना ही सब चीज़ों के लिए उपयुक्त होता।

"मुझे वहीं जाना है। मुझे सोना ही चाहिए।" मैड़ास ने कहा।

"अगर यही बात है, तो तुम मेरे साथ राजा के पास आओ। वे तुम्हारी इच्छा पूरी कर सकेंगे।" वृद्ध साकर ने कहा। मैड़ास मान गया। दोनों मिलकर एक और घाटी में गये। वहाँ फूल की एक झाड़ी के पीछे साकर का राजा बैठा हुआ था।

"हमारे बूढ़े ने बड़ी गलती की। उसको आपके गुलाब के बगीचे में सोना नहीं चाहिए था। फिर भी उसको फिर

हमें वापिस दिया, माँगिये, आप क्या चाहते हैं?" साकर के राजा ने मैड़ास से पूछा।

"मुझे और कुछ नहीं चाहिये, ऐसी बात बताइये कि जो कुछ मैं छूऊँ वह सोना हो जाये।" मैड़ास ने कहा।

साकरों के राजा ने ज़ोर से हँसकर कहा—"अच्छा," उसने उसको अपने मन्त्र दण्ड से छुआ।

मैड़ास की आँखों से आनन्द के आँसू बहने लगे। जो बात उसकी माँ छुटपन में कहा करती थी, वह अब ठीक निकली। अब जितना सोना उसके पास होगा, संसार में किसी और के पास न होगा।

उसने घर जाते जाते एक पेड़ का तना तोड़ा। तुरत वह सोना हो गया और इतना भारी हो गया कि वह उसे उठा भी न सका। जब उसने रास्ते का एक पत्थर उठाया तो वह भी सोने का हो गया। वह चप्पल उतारकर घास पर चला, जहाँ-जहाँ उसके पैर पड़ते, वहाँ वहाँ घास भी सोना हो गई, जब धूल में से चलता तो उसके कदम के निशान भी सोने के हो गये। मैड़ास पागल-सा हो गया। वह आनन्द में चिल्लाया—"सोना सोना।" घर के खम्भे, दीवारें, फ़र्श, सब सोने के हो गये। उसके शरीर के कपड़े उससे पहिले ही सोने के हो गये।

उसे भूख लगने लगी। भोजन के लिए बैठा। वह जिस कुर्सी पर बैठा था और सामने की मेज, उसके छूने से सोने की हो गई। पर जब उसने भोजन और पेय छुये तो वे भी सोने के हो गये, अब एक और आफ़त आ पड़ी थी।

भोजन तो मिला ही नहीं, उस दिन वह आराम से सो भी न सका। वह जिस

बढ़िया मुलायम बिस्तरे पर लेटा था, वह उसके छूते ही सोने का हो गया और इतना सख्त हो गया कि उस पर उसका शरीर दुखने लगा।

रात अभी गुज़री भी न थी कि सोने से उसको सख्त नफ़रत हो गई। बगीचे में उसको फल फूल बड़े सुन्दर दिखाई दिये, परन्तु वह उन्हें छू भी न सकता था। वह भूख के मारे मरा जा रहा था और यह सब आफ़त उसने खुद मोल ली थी।

इस दुस्थिति से निकलने के लिए मैड़ास फिर साकर राजा के पास गया। भागा भागा वह उसके पैरों पर पड़ा।

"हुज़ूर, मेरी अक़्ल मारी गई थी, इसलिए ही मैंने इतना अहितकर वर माँगा। मेरे लोभ ने मेरा सत्यानाश किया। मेरा इस सोने से छुटकारा कीजिये।"

साकर राजा ने हँसकर कहा—"सच मुच जो वर तुमने माँगा था, वह मूर्खतापूर्ण था। वर पाने के बाद जो जो मुसीबतें तुम झेल रहे थे, उन सब का अनुमान करके, हम बड़े खुश हुए। इसलिए मैं तुम्हें क्षमा करता हूँ। यदि तुम मामूली आदमी बनना चाहो, तो इस पहाड़ पर से जाओ, एक घाटी आयेगी। उसमें एक नदी है। उसमें जाकर तुम स्नान करो।"

मैड़ास वहाँ गया, ज्यों ही वह नदी में डुबकी लगाकर निकला तो उसके कपड़े मामूली हो गये। मैड़ास मामूली आदमी हो गया। परन्तु जिस जगह उसने डुबकी लगाई थी, उसके आस पास का इलाका सब सोने का हो गया। मैड़ास जिस नदी में नहाया था, उस नदी का नाम पक्टोलस है। उस नदी स्रोत के पास, कहा जाता है अब भी सोना मिलता है।

अयोध्या काण्ड

"राम को वन भेजकर भरत का राज्याभिषेक करने का मार्ग मैं बताती हूँ, सुनिये। जो मैं कहूँ, वैसा ही कीजिये। एक बार देवासुर युद्ध में आपके पति इन्द्र की सहायता करने गये। उनके साथ आप भी गईं। दण्डकारण्य में मत्स्यध्वज के राज्य में वैजयन्त के पास शम्बर नामक बलशाली असुर से लड़ते लड़ते आपके पति घायल हुए और मूर्छित हो गये। तब आप उनको युद्ध भूमि से दूर ले गईं और आपने उनके प्राणों की रक्षा की। होश आने पर आपकी सेवा से सन्तुष्ट होकर उन्होंने दो वर देने चाहे। आपने कहा कि बाद में माँग लूँगी। देखिये! अब दोनों वर माँगने का समय आ गया है। राम को चौदह वर्ष का वनवास और भरत का राज्याभिषेक करने के लिए पति से अब दो वर माँगिये।" मन्थरा ने कैकेयी को बताया।

कैकेयी वस्तुतः अच्छे स्वभाव की थी। परन्तु मन्थरा के कहने सुनने पर उसका मन बुरी बातें सोचने लगा। मन्थरा ने उसके मन में एक बुरा ख्याल ही न डाल दिया था, बल्कि उसे पूरा करने के लिए तरीका भी बता दिया था।

कैकेयी ने मन्थरा से कहा—"अरे कुबड़ी, तू सचमुच अक्लवाली है। जिस प्रकार तुम मेरा हित चाहती हो और कोई नहीं चाहता।" उसने कुबड़ी की सलाह

पर अपने सब गहने निकाल दिये। फटी साड़ी पहिनकर कोपगृह में चली गयी और फर्श पर लेट गई।

"जब आपके पति आपको देखने आयें तो आप बिना रुके रोते जाइये। राजा न आपका क्रोध, न शोक ही सह सकते हैं। उनको दूर करने के लिए वे अपने प्राण तक दे देंगे। जब तक वे आपको दोनों वर न दे दें, तब तक आप टस से मस न होना। कहेंगे कि हीरा मोती दूँगा। आप कहना कि नहीं चाहिए। सोच लीजिये, जब भरत चौदह साल राज्य कर लेंगे उन्हें कोई भी सिंहासन से न हटा सकेगा।" मन्थरा ने कहा।

"उस शम्बर असुर से तुम ही अधिक चालाक हो।" कैकेयी ने मन्थरा की प्रशंसा की। उसने यहाँ तक निश्चय कर लिया कि यदि पति ने वर न दिये तो आत्महत्या तक कर लूँगी।

दशरथ राम के पट्टाभिषेक की आज्ञा देकर, कैकेयी को स्वयं यह शुभ वार्ता देने के लिए उसके शयनकक्ष में गये। वहाँ उसको न देख चकित हो, वे चिल्लाये—"कैकेयी तुम कहाँ हो?" जवाब नहीं मिला। फिर अन्तःपुर के द्वार के पास आकर द्वारपालिका से पूछा—"कैकेयी कहाँ है?"

"द्वारपालिका ने हाथ जोड़कर कहा—"प्रभु, वे कोपगृह में हैं।"

दशरथ घबराये। वह कोपगृह में गये। वहाँ कैकेयी को फर्श पर पड़ा देखा। लाखों वराहा के कीमतवाले मोती के हार और आभूषण फर्श पर इस तरह बिखरे हुए थे, जिस तरह तारे आकाश में बिखरे हुए होते हैं।

दशरथ ने बड़े प्रेम से कैकेयी के पास आकर पूछा—"क्यों, तुम को गुस्सा आ गया है? किस पर? क्या किसी ने तुम्हें डांटा है? अपमान किया है? क्या स्वास्थ्य ठीक नहीं है? वैद्यों को बुलवाऊँ? क्यों रो रही हो? जिसे तुम चाहोगी, उसे दण्ड दूँगा। चाहे वे निरपराधी ही हों। तुम्हारे लिए किसी भी दरिद्र को धनी बना दूँगा। जब सब तुम से विनय का बर्ताव करते हैं, तब तुम किस बात का दुःख कर रही हो? बताओ तुम्हारी इच्छा क्या है? मैं अपने प्राण देकर तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा। उठो, कैकेयी।"

यह सुन कैकेयी ने कहा—"मेरा किसी ने कोई अपकार नहीं किया है। अपमान भी नहीं किया है। मेरी एक इच्छा है। यदि उसे पूरा करने की प्रतिज्ञा करेंगे तो बताऊँगी।"

दशरथ यह सुनकर मुस्कराया। कैकेयी की वेणी हाथ में पकड़कर, प्राण समान राम की शपथ लेकर, उन्होंने कैकेयी की इच्छा पूरी करने का वचन दिया।

तब कैकेयी ने दशरथ को शम्बर के युद्ध के और उसमें उनके मूर्छित होने के और उस समय उनको दूर ले जाकर सेवा-शुश्रूषा करने के बारे में बताया और याद दिलाया कि उस समय उन्होंने दो वर माँगने के लिए कहा था, पर उसने कहा था कि बाद में माँगूंगी। फिर उसने दोनों वर क्या थे, बताये—राम का पट्टाभिषेक न होकर, भरत का हो। राम वल्कल वस्त्र पहिनकर, जटा बढ़ाकर, मुनि वेश में चौदह वर्ष वन में काटे।

ये बातें सुनते ही दशरथ घबरा उठे। वह मूर्छित हो गये। हाथ पैर हिलने लगे। वह आहें भरने लगे। उन्होंने कैकेयी को डांटा फटकारा।

वर माँगा है। राम ने जो सेवा तुम्हारी की है, उसका चौथा हिस्सा भी भरत ने नहीं किया है। यदि तू कहे कि राम की अपेक्षा भरत तुम्हें अधिक प्रिय है, तो मुझे विश्वास न होगा। तुम्हारी बातों से मुझे बड़ी पीड़ा हो रही है। देखो, मैं बूढ़ा हूँ। कभी भी जा सकता हूँ। चाहो तो सारा संसार ले लो, पर राम पर क्रोध न करो। तुम्हें नमस्कार!" दशरथ बहुत देर तक कैकेयी को समझाते रहे।

जैसे जैसे दशरथ गिड़गिड़ाता जाता था, वैसे वैसे कैकेयी का क्रोध बढ़ता जाता था। पहिले वर देने को कहकर, फिर इच्छा पूरी करने का वचन देकर अब मुकर जाना कैकेयी ने कहा, राजवंश पर ही कलंक था। उसने कहा कि वह वर वापिस न लेगी और यदि राम का पट्टाभिषेक हुआ तो वह आत्महत्या कर लेगी।

"यह सोच कि तू राजकुमारी है, लाकर मैंने घर में रखा। पर तुम तो जहरीली साँप हो। तुम्हें वह माँ मानता है, फिर उसके साथ तुम ऐसा वर्ताव क्यों कर रही हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? उसने ऐसा कौन-सा पाप किया है कि मैं उसे वन में भेजूँ। मैं अपने प्राण त्याग सकता हूँ, पर राम को बिना देखे नहीं रह सकता। तुम ये जिद छोड़ दो। मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ। तुम ये वर न माँगो। शायद तुमने यह जानने के लिए कि मुझे भरत पर प्रेम है कि नहीं, यह

दशरथ मानसिक व्यथा से दग्ध-सा हो उठे। कितनी विषम परिस्थिति थी। "बेटा, वन में जाकर रहो।" कैसे राम से यह कहा जाय! यदि कैकेयी की इच्छा के अनुसार राम का पट्टाभिषेक छोड़ दिया गया तो और राजा क्या कहेंगे!

"पट्टाभिषेक आपने खूब किया।" क्या वे परिहास न करेंगे! कौशल्या का मुँह कैसे देखूँगा। वह मन ही मन दुखी होने लगे। कैकेयी को खूब फटकारा। उसे मनाया। बीच बीच में मूर्छित हो गये। वे बड़ बड़ाये। वह रात प्रलय रात्रि की तरह उन्होंने काटी।

वशिष्ठ अपने शिष्यों के साथ राजमहल में आये। अन्तःपुर के द्वार पर उनको सुमन्त्र दिखाई दिया। उसने राजा से उनके आगमन के बारे में कहा। वशिष्ठ ने कहा कि पट्टाभिषेक की सब तैयारियाँ पूरी हो गईं थीं। अब बस राजा के आने की ही देरी है, यह बताने के लिए सुमन्त्र अन्तःपुर में गया। सुमन्त्र वृद्ध था। महाराजा का बालमित्र था। इसलिए किसी ने उसको रोका नहीं।

वह सीधे राजा के पास गया। वह राजा की मानसिक स्थिति का अनुमान न कर सका। उसने सोचा कि वह सो रहा था। उसने कहा—"महाराज, उठिये। सूर्योदय हो गया है। राम का पट्टाभिषेक करने के लिए सब आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

दशरथ की आँखें शोक के कारण लाल हो रही थीं। उसने सुमन्त्र को देखकर कहा—"अरे भाई, मुझे क्यों इन बातों से सताते हो!" यह जानते ही कि दशरथ दुःखी थे, सुमन्त्र हाथ जोड़कर दो कदम पीछे हट गया।

दशरथ चूँकि सुमन्त्र से बात करने की स्थिति में न थे, इसलिए कैकेयी ने कहा—"सुमन्त्र, रात भर महाराजा को इस खुशी में नींद न आयी कि सवेरे राम का पट्टाभिषेक होगा। अभी अभी ही सोये हैं। तुम जाकर राम

को बुला लाओ। यही राजा की आज्ञा समझो।"

"राम शायद यहीं आकर अपना पट्टाभिषेक करेंगे!" सोचता सुमन्त्र वहाँ से चला गया। नगर में उत्सव का कोलाहल हो रहा था। राजमहल लोगों से ठसाठस भरा था। सब तैयारियाँ हो गई थीं। राजा भेंट उपहार लाये थे। वे सोच रहे थे—"राजा नहीं दिखाई दे रहे हैं। उनको कैसे बताया जाये कि हम आ गये हैं।"

सुमन्त्र ने उनसे कहा—"मैं महाराजा से कह दूँगा कि आप सब यहाँ उपस्थित हैं। उनके पास राम को ले जा रहा हूँ।"

वह फिर दशरथ के अन्तःपुर में वापिस गया। दशरथ के पास जाकर उसने कहा—"दशरथ महाराज, विजयी भव! रात बीत गई है, प्रातःकाल हो गया है, सूर्योदय भी हो चुका है। आपके लिए ब्राह्मण, सेनापति, नगर के प्रतिष्ठित लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं। उठिये और जो कुछ करवाना है वह करवाइये।"

"राम को लाने के लिए तुमको कैकेयी ने कहा था न! उसको बिना लिये तुम क्यों आये? क्या उसकी आज्ञा मेरी आज्ञा नहीं है! मैं सो नहीं रहा हूँ। जाग रहा हूँ। जल्दी राम को बुलाकर लाओ।" दशरथ ने कहा।

सुमन्त्र ने राजा को नमस्कार करके कहा—"कोई बड़ी व्यवस्था की जाती मालूम होती है।" वह मन ही मन खुश होता, लोगों को सड़कों पर देखता राम के महल की ओर गया। वहाँ लोगों के झुन्ड के झुन्ड जमा हुए थे। राम के अन्तःपुर के चारों ओर हाथी घोड़े, सैनिक, मन्त्री वगैरह खड़े थे। सुमन्त्र उन सब को

हटाता राम के सत मँजिले महल में गया। उसने राम के पास अपने आगमन की सूचना दी और उनकी अनुमति पाकर उनके पास गया।

राम अलंकृत होकर सोने की पीठिका पर बैठे थे। सीता पास में खड़ी हो उनपर चामर झल रही थीं। सुमन्त्र उनके पास गया। नमस्कार करके कहा—"आपके पिता जी कैकेयी के अन्तःपुर में हैं। वे आपको देखना चाहते हैं।"

यह सुन राम फूले न समाये। उन्होंने सीता को अन्दर भेजकर पट्टाभिषेक के लिए जो जो अलंकार पहिने थे, उनके साथ ही निकल पड़े। वह शेर के चमड़े से अलंकृत रथ पर सवार हुए थे कि लक्ष्मण भी पीछे आकर बैठ गये। वह एक हाथ से भाई का छत्र पकड़कर दूसरे हाथ से चामर करने लगे। राम के पीछे घुड़ सवार और हाथियों पर सवार होकर हज़ारों का जलूस निकल पड़ा। रास्ते में भीड़ ही भीड़ थी। सब ने सोचा—"वे हैं राम, आज ही पट्टाभिषेक होगा।"

राम का रथ दशरथ के महल के पास पहुँचा। तीनों प्राकार पार करके खड़ा हो गया। जो लोग उनके पीछे आये थे, वे भी वहीं खड़े हो गये। राम पैदल ही दो और प्राकार पार करके दशरथ के अन्तःपुर में गये।

एक सुन्दर आसन पर दशरथ और कैकेयी बैठे हुए थे।

राम ने पिता की और कैकेयी की चरण धूलि ली। "राम...." दशरथ ने कुछ कहना चाहा। पर उनका गला रुंध गया। आँखें मुँद गईं। और आँसू बहने लगे। वे कुछ और सहसा न कह सके। उन्होंने मुँह मोड़ लिया।

एवरेस्ट की चोटी

यह नेपाल और चीन की सीमा पर है। यह संसार में सबसे अधिक ऊँची चोटी है। इसकी ऊँचाई २९,१५० फीट है। १९२२ से इस शिखर पर चढ़ने के बहुत-से प्रयत्न किये गये। आखिर १९५८ में तेन्सिन्ग और हिलेरी इस शिखर की चोटी पर पहुँच सके
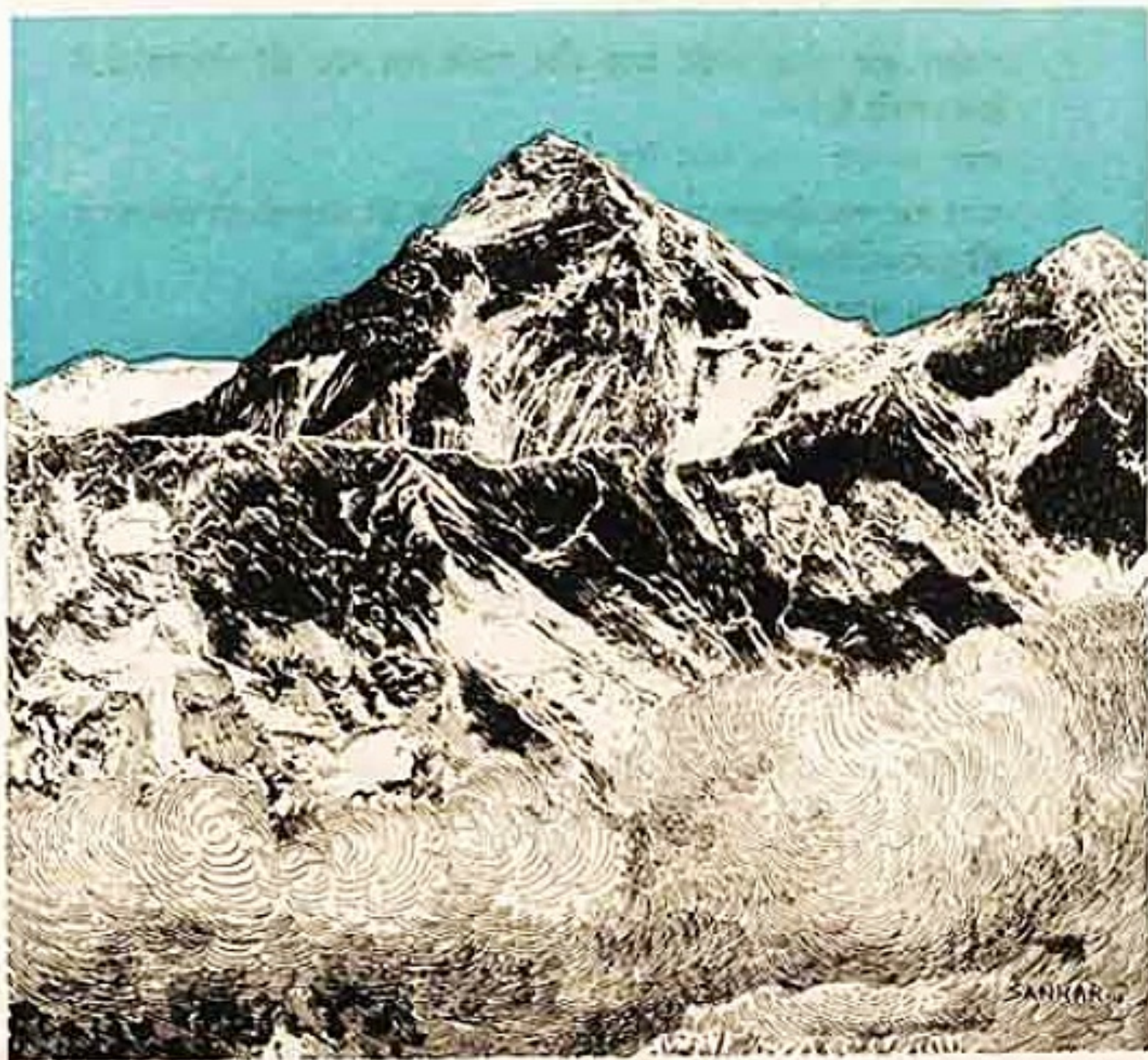
१. नलिनी मेहरोत्रा, इलहाबाद

"क्या हम लोग अपने प्रश्न और अपने मत एक ही पोस्टकार्ड में भेज सकते हैं?

अच्छा हो यदि अलग अलग भेज सकें।

क्या हम एक पोस्टकार्ड पर एक बार में एक ही नाम से दो तीन तरह की परिचयोक्तियाँ भेज सकते हैं?

जहाँ तक सम्भव हो, पोस्टकार्ड पर एक ही परिचयोक्ति लिखिये।

२. त्रिभुवन गिरि, कलकत्ता

क्या मैं एक ही पोस्टकार्ड पर प्रश्न और परिचयोक्तियाँ भी भेज सकता हूँ?

नहीं, अलग अलग भेजिये।

३. कुमारी कुसुमलता कटकवार, अकलतरा

"प्रश्नोत्तर" में जितने प्रश्न-कर्ता हैं—क्या वे बालक हैं? या युवक—उनकी क्या उम्र होगी?

इस बारे में हम भी आपकी तरह अनुमान कर सकते हैं—हमारे पास कोई जानकारी नहीं है।

४. झलसिंह ध्रुव, भिलाई

क्या आप "चन्दामामा" में रामायण के पूर्ण भाग प्रकाशित करेंगे?

अभी तो यही इरादा है।

५. कृत्तिवास नायक, विलासपुर

क्या आप चन्दामामा की वर्ष गाँठ का विशेषांक निकालते हैं?

नहीं।

६. नारायण टी लालवाणी, आदिपुर

आप "चन्दामामा" को बड़े साईज में क्यों नहीं छापते?

हमारी दृष्टि में इसका वर्तमान आकार सबसे अधिक सुविधाजनक है।

७. महमूद अखतर सिद्दीकी, राजपुर

क्या आप अपने प्रिय पाठकों के ही उत्तर देते हैं?

हमारे लिए सभी पाठक प्रिय हैं—हम प्रश्नों का ख्याल करते हैं, पाठकों का उतना नहीं।

क्या कारण है कि आप चन्दामामा में कवितायें नहीं देते हैं?

क्योंकि विशेषतः यह कहानियों की पत्रिका है।

८. हीरालाल हेमन्ददास, अहमदाबाद

जो चन्दामामा के ग्राहक हैं वे ही प्रश्न लिख सकते हैं या दूसरे भी?

हर कोई भेज सकता है। पर हम चाहेंगे कि प्रश्न भेजने से पहिले यह स्तम्भ दोन तीन बार देख लें।

९. विजयप्रसाद, गया

क्या चन्दामामा में सिर्फ़ चन्दामामा सम्बन्धी प्रश्न पूछ सकते हैं?

फिलहाल हाँ।

१०. राममूर्ति नानटचन्द्र, जमसीगपुर

पाठकों के मत का पता बताने की कृपा करें।

वही पता है, जो चन्दामामा का पता है।

Photo by P. R. Shinde
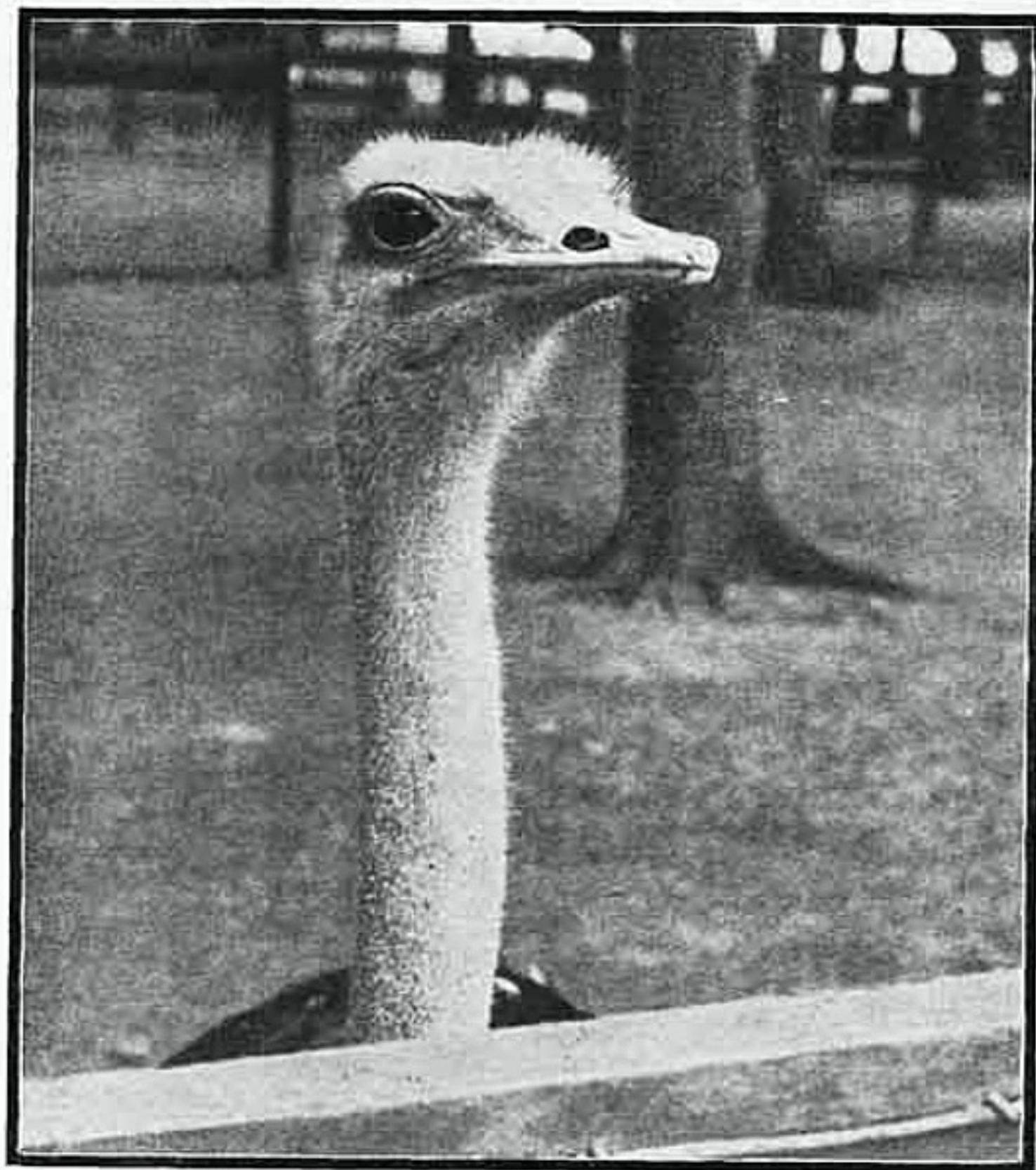
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

देख रहा है आँख फाड़कर !

प्रेषक :
लक्ष्मीनन्द गुप्ता - रावा

Photo by M. V. Vijayakar
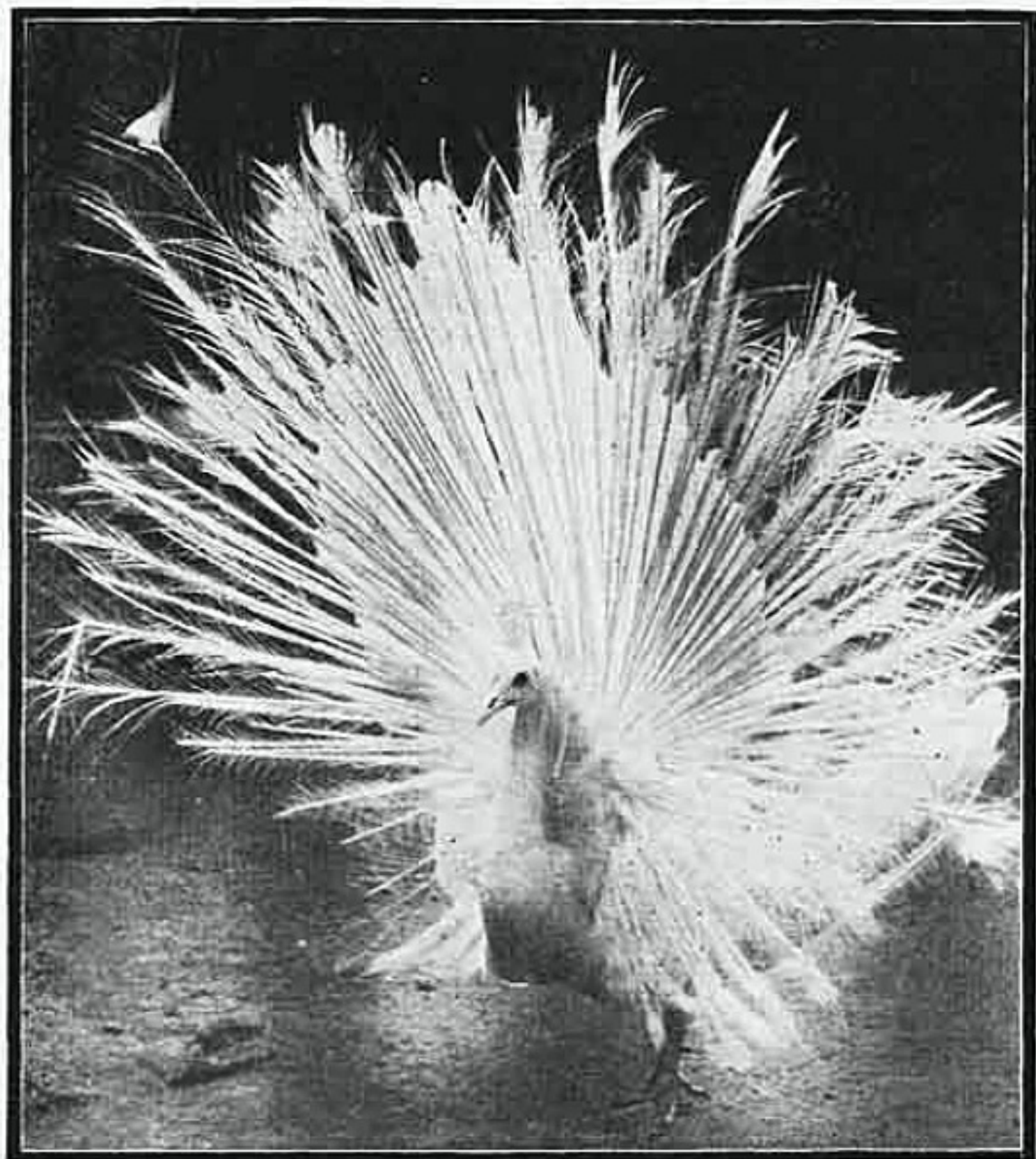
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

नाच रहा है पंख उठाकर !!

प्रेषक :
लक्ष्मीचन्द गुप्ता - सागर

अन्तिम पृष्ठ

गदा युद्ध में दुर्योधन को पराजित करने पर जब पाण्डव पक्ष के योद्धा भीम का अभिनन्दन कर रहे थे, तब कृष्ण ने उनको रोका और दुर्योधन को उलाहना देते हुए कहा—" इसने बड़ों की बात न सुनी, इसलिए इस अधम की यह गति हुई है। जो मर गया है, उसे और क्या मारोगे! चलो, रथ पर सवार हो हम चलें।"

दुर्योधन की जंघायें फट गई थीं। ये बातें सुन गुस्से में वह हाथों के बल उठा। उसने कहा—" कृष्ण, तुमसे अधिक पापी कौन है! भीष्म, द्रोण, कर्ण और मुझे तुमने अन्याय करके ही तो हराया है! तुम समझते हो कि तुम्हें मैंने मेरी जाँघ पर प्रहार करने के लिए संकेत करते नहीं देखा था? तुम्हें शर्म नहीं आती, यह सब कहते?"

"जो तुम बचपन से पाण्डवों के साथ अन्याय करते आये थे, मैंने सिर्फ उसका बदला ही लिया है। तुमने लालच के कारण पाण्डवों को उनका राज्य नहीं दिया, तभी तो यह युद्ध हुआ।" कृष्ण ने कहा।

फिर पाण्डव, दुर्योधन के शिविर में गये। वह सूनसान था। कृष्ण ने अर्जुन से कहा—"गाण्डीव की प्रत्यंचा निकाल दो। अक्षय तूणीर लेकर तुम रथ से उतरो, फिर मैं उतरूँगा।"

अर्जुन रथ से उतरा। कृष्ण भी, फिर रथ तुरत जलकर राख हो गया। अर्जुन ने आश्चर्य से पूछा—"यह क्या है?"

"अस्त्रों ने इसे कभी ही राख कर दिया था। मैं था, इसलिए यह अब तक नहीं जला था।" कृष्ण ने कहा।

पाण्डवों ने दुर्योधन के शिविर में जो कुछ धन-सम्पत्ति थी, उसे स्वाधीन कर लिया, दास और दासियों को भी ले लिया। गान्धारी और धृतराष्ट्र को चिढ़ाने के लिए आ रहे थे, तो कृष्ण ने उनसे कहा—"तुम्हारा रात में शिविर में सोना शुभकर नहीं है।"

यह जानते ही कि दुर्योधन की जाँघ टूट गई थी, अश्वत्थामा, कृप, कृतवर्मा उसके पास गये। वे रोये धोये। अश्वत्थामा ने कहा—"राजा, आज रात ही पाण्डव और पाँचालों को मार दूँगा। अनुमति दो।"

दुर्योधन ने कृपाचार्य से कहा—"गुरुवर्य, एक लोटे में पानी लाकर, अश्वत्थामा को कौरव सेनापति के रूप में अभिषिक्त करो।"

अभिषिक्त होने के बाद अश्वत्थामा ने दुर्योधन का आलिंगन किया। फिर वे तीनों वीर, दुर्योधन को छोड़कर चले गये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

मार्च १९६२ :: पारितोषिक १०)

कृपा परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर तारिक ७ जनवरी १९६२ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

जनवरी – प्रतियोगिता – फल

जनवरी के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **देख रहा है आँख फाड़कर !**

दूसरा फ़ोटो : **नाच रहा है पंख उठाकर !!**

प्रेषक : **लक्ष्मीचन्द गुप्ता,**

रा. मा. शाला, सावा, पो० सावा, जि. चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

चित्र-कथा

एक रोज दास और वास पहाड़ के पास टहलने गये। वहाँ उन्हें एक गड़रिया दिखाई दिया। उसने कहा—"देखो, उस गुफ़ा में एक भूत है, मैं उसे मन्त्र पढ़कर मुट्ठी में पकड़ लूँगा। क्या तुम कर सकते हो यह ?" दास और वास ने उससे ही लाने के लिए कहा। गड़रिया अन्दर गया। अन्दर आवाज हुई। गड़रिया भागने को था कि गुफ़ा में से "टाइगर" उसके पीछे भागा। "यही शायद वह भूत है।" दास और वास यह सोच हँसे।

Printed by B. NAGI REDDI for the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

कृपया बाधा न डालिए

उसे जल्दी सीखना है, तेजी से बढ़ना है

वह पहले पेट के बल सरक-सरक कर खिसकना सीखेगी, फिर बैठना, फिर खड़े होना और फिर चलना, ये सभी बातें वह साल भर में ही सीख लेगी। और इतने ही दिनों में उसका वज़न भी दुगुना हो जायगा। लेकिन माँ-बाप की देखरेख के बिना भला वह स्वयं यह सब कैसे कर लेगी। बदहज़मी के कारण उसके सीखने और बड़े होने में बाधा न पड़े, यह देखना माँ-बाप की ज़िम्मेदारी है।

डाक्टरों का कहना है कि बच्चों को अमृतांजन लिमिटेड का **ग्राइप मिक्सचर** पिलाना चाहिए क्योंकि यह तुरन्त आराम पहुँचानेवाली फायदेमंद दवा है। इसको पिलाने से बच्चों के दांत बिना तकलीफ आसानी से निकल आते हैं।

अपने बच्चों को रोज सुबह अमृतांजन लिमिटेड का **ग्राइप मिक्सचर** एक चाय चम्मच भर पिलाया कीजिए। इस तरह आप उसके जल्दी सीखने और बढ़ने में मदद करेंगे।

अमृतांजन
लिमिटेड का
ग्राइप मिक्सचर

AMRUTANJAN
LTD.'S
Gripe Mixture

Manufactured by
AMRUTANJAN LIMITED

प्रस्तुतकारक : अमृतांजन लिमिटेड, १४/१५, लूज चर्च रोड, मद्रास-४
बंबई-१, कलकत्ता-१ और नई दिल्ली-१ में भी